

धर्मपद

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर-751017



सत्यमेव जयते



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यमिष्टा
Dedicated to Truth in Public Interest

वार्षिक पत्रिका-2022
ग्यारहवाँ अंक



धर्मपद

वर्ष 2022

अंक 11

अवधि - वार्षिक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन

सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर

भुवनेश्वर - 751017 (ओड़िशा)

मूल्य- राजभाषा के प्रति निष्ठा

धर्मपद पत्रिका परिवार

- ❖ मुख्य संरक्षक - श्री बिभुदत्त बसंतिया,
महानिदेशक लेखापरीक्षा
- ❖ संरक्षक - श्री दुसासन बेहेरा,
निदेशक
- ❖ संपादक - सुश्री कीर्ति श्री
हिंदी अधिकारी
- ❖ उपसंपादक - श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
- ❖ टंकण कार्य- श्री राजु कुमार, डी.ई.ओ.
सुश्री होशाना तोपनो, व. लेखापरीक्षक
श्री प्रभात रंजन, व. लेखापरीक्षक
श्री निरूपम कर्माकर, लेखापरीक्षक
- ❖ तकनीकी सहयोग एवं मुखपृष्ठ - श्री राजु कुमार, डी.ई.ओ.
- ❖ विशेष सहयोग - श्री शशि रंजन, सचिव, महानिदेशक लेखापरीक्षा

मुख्य संरक्षक का संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में यह हमारा एक और सुदृढ़ कदम है।

भारत विविधताओं वाला देश है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ भारत की विशिष्टता हैं। भारत की इस विशेषता के बावजूद इसकी आंतरिक एकता हर क्षेत्र में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। एकता की यह भावना हिंदी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त हो पाती है। हिंदी ने अपने सहजता तथा सरलता के कारण सामान्य बोलचाल के साथ-साथ कार्यालयी भाषा के रूप में भी अपना दृढ़ स्थान बना लिया है। जीवन के हर क्षेत्र में हिंदी का उपयोग निरंतर बढ़ ही रहा है। केंद्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हम सभी का यह उत्तरदायित्व है कि हिंदी के इस विकास यात्रा में अपना निष्ठापूर्ण योगदान दें। राजभाषा हिंदी के प्रति यह समर्पण पत्रिका के रचनाकारों तथा पाठकों के उत्साह से स्पष्ट होता है। मेरा अटूट विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार तथा सभी रचनाकारों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(बिभुदत्त बसंतिया)

महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे

संरक्षक का संदेश



हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

वैश्वीकरण के आज के युग में जन-जन को जोड़ने वाली सर्वग्राही भाषा के रूप में हिंदी का महत्व आज किसी से छिपा नहीं है। राजभाषा के ओहदे के साथ प्राप्त दायित्वों का हिंदी ने सर्वथा निर्वहन किया है और भारतवर्ष को जोड़ने वाली कड़ी बनी है। राजभाषा हिंदी के विकास के प्रति हम हमेशा से प्रतिबद्ध रहे हैं। इसके प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये पत्रिकाएँ कार्मिकों की रचनात्मकता एवं सृजनशीलता को एक मंच प्रदान करती हैं। जब भाषा भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है तो वह सहज ही जन-जीवन का अंग बन जाती है। मुझे आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा के प्रति अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

दु. ब्रह्म

(दुसासन बेहेरा)

निदेशक, पूर्व तट रेलवे

संपादकीय

‘भाषा’- एक ऐसा माध्यम जिसके द्वारा एक मनुष्य के भावनाओं और संवेगों का प्रेषण दूसरे मनुष्य तक संभव हो पाता है । विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण समाज को जोड़ने में भाषा की महत्ता अतुलनीय है । साथ ही, भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में भाषा का दायित्व और बढ़ जाता है । भाषायी रूप से समृद्ध हमारे देश को एकसूत्र में बाँधे रखने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो बिना किसी भेद-भाव के पूरे भारत का प्रतिनिधित्व कर पाए। राजभाषा के रूप में हिंदी ने भारत की अन्य सभी भाषाओं को साथ लेकर अपने दायित्व का पूर्णता से निर्वाह किया है ।

कार्यालयी कामकाज तथा आम जीवन, दोनों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ा है। जब किसी भाषा को सृजनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए उपयोग किया जाए तो यह मान लेना चाहिए कि वह भाषा जनमानस की आत्मीय हो चुकी है। कार्यालयीन पत्रिका इसी अभिव्यक्ति के लिए एक मंच है। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में भी राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह तथा समर्पण अभिभूत करता है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिनके सहयोग से ‘धर्मपद’ पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप सभी के सहयोग की अभिलाषी हूँ।

सभी पाठकों से यह अनुरोध है कि पत्रिका के लिए अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया हमें दें ताकि हम आगामी अंकों को और बेहतर बना सकें।

सधन्यवाद,



(कीर्ति श्री)

हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1.	रेडियो	श्री विभास चन्द्र, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	1-2
2.	गरीबी	श्री नवीन कुमार चौबे, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	3
3.	हिसाब क्या दूँ	श्री गोबिंद दीप, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	4
4.	मुझे भी आने दो दुनिया में	श्री निरंजन परिडा , सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	5
5.	आस्था और स्वास्थ्य	श्री दीपक कुमार दास, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	6-7
6.	अमर बलिदान	सुश्री स्वास्तिक षडंगी	8
7.	वक्त का अभाव	श्रीमती नेहा कुमारी	9
8.	कहानी की कहानी	श्री सौरभ दास, सहायक पर्यवेक्षक	10-17
9.	विडंबना	सुश्री प्रेरणा किशोर	18
10.	विवशता	श्री बिक्रम महापात्र, वरि. लेखापरीक्षक	19-20
11.	उदास न हो	श्री प्रभात रंजन, वरि. लेखापरीक्षक	21
12.	गाँव का बचपन	श्री राजु कुमार, डी. ई. ओ.	22-23
13.	बदलाव	श्री मानस रंजन जेना, लेखापरीक्षक	24
14.	जिंदगी	बिमल टोपनो, वरि. लेखापरीक्षक	24
15.	विजय	सुश्री स्नेहा राउत	25
16.	जीवन का पाठ	सुश्री सागरिका साहू	26
17.	आईना	श्री चंदन कुमार, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	27
18.	जल संरक्षण का महत्व	श्रीमती नीतु चंद्रा	28-29
19.	हर रंग हिंदुस्तान हो	सुश्री अनन्या परिडा	30
20.	गुड न्यूज के बाद	श्रीमती रोमा कुमारी	31-37
21.	गुरु के गुरु	सुश्री स्वागतिका साहू	38-39
22.	मानवता	श्रीमती सुषमा चौबे	40
23.	विविधता में एकता	सुश्री इप्सिता साहू	41
24.	बचपन की सीख	श्रीमती बबीता दास	42-43
25.	कल्पना	श्री विक्रान्त आनंद, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	44-45
26.	पेड़ बचाओ	श्री बासुदेव हाजरा , लिपिक	46
27.	भारतीय रेल	श्रीमती सुष्मिता कुमारी	47-50
28.	दोस्ती	सुश्री श्रद्धा राउत	51
29.	मुर्गा और घमंड	श्री आदर्श साहू	52
30.	राजगृह	श्रीमती अनीशा कुमारी	53-55
31.	आपके पत्र		56-59
32.	चित्रकला		59-60

रेडियो

श्री विभास चंद्र

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ये बात तब की है जब मैंने सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के तौर पर कोलकाता में अपनी सेवा शुरू ही की थी। एक महीने पेईंग गेस्ट के तौर पर रहने के बाद क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, कोलकाता के उल्टाडांगा स्थित होस्टल में मुझे एक कमरा मिल गया। कुल 32 प्रशिक्षु होस्टल में थे। पंकज कुमार ठाकुर मेरा रूममेट था। राजेश और फुरबा दोरजी ग्राउंट फ्लोर पर रहते थे। राजेश के रूम में ही हमारी शाम की महफिलें सजा करती थी। डिनर के बाद हम कभी डम्ब सैराड खेल लिया करते थे तो कभी राजेश कहानी या गाने सुनाता था। ये वो वक्त था जब मोबाइल का 'होमो सैपियंस वर्जन' स्मार्ट फोन (होमो सैपियंस क्यों कह रहा हूँ, आगे बताऊँगा) बाजार में नहीं आया था। अतः दोस्त-यार साथ में ज्यादा, मोबाइल पर कम वक्त गुजारते थे। मुझे रेडियो सुनने का शौक था। यह शौक पापाजी के कारण हुआ। मेरे घर में छः बैटरियों वाला फिलिप्स का एक रेडियो हुआ करता था। पापाजी शनिवार को नियमित रूप से 2 से 3 बजे तक पुरानी हिंदी फिल्मों के गाने सुनते थे। उस छोटी उम्र से रेडियो से मेरा परिचय है और साथ ही लता मंगेशकर, मुकेश, रफी, किशोर, आशा और मन्ना डे से भी।

अतः मैं एक दिन रेडियो खरीदने के लिए अपने मित्र राजेश के साथ सोनी शोरूम गया, जो मेरे होस्टल के सामने ही दूसरी तरफ था। वहाँ से सोनी का एक प्यारा सा सेट खरीदा। मैं उसपर पुराने गाने और गजलें सुना करता था। शादी के बाद टी.वी. घर में आ गया, मोबाइल का 'होमो सैपियंस वर्जन' आ गया लेकिन मेरा रेडियो के प्रति प्यार बदस्तूर जारी रहा। रेलविहार में छत पर चाँदनी रात में पत्नी के साथ पुराने हिंदी गानों का आनंद लेना मेरे लिए टी.वी. देखने से ज्यादा आनंददायक था।

अब मेरे बच्चे बड़े हो रहे हैं। बड़े हो रहे बच्चे शैतानियाँ करते ही हैं और घर में तोड़-फोड़ भी मचाते हैं। एक दिन मेरा रेडियो भी इसका शिकार हो गया और बजना बंद कर दिया। अपना रेडियो बनवाने के मकसद से मैंने 'सोनी कस्टमर केयर' को फोन किया। कस्टमर केयर वालों ने मुझे सोनी सर्विस सेंटर (भुवनेश्वर) के दो नंबर दिए। मैंने जब एक सर्विस सेंटर को

फोन किया तो उधर से आवाज आयी- 'साहब, सोनी ने रेडियो बनाना बंद कर दिया है । मोबाइल पर अब सब उपलब्ध है । अतः रेडियो के पार्ट्स उपलब्ध नहीं होने के कारण इसकी मरम्मत नहीं की जा सकती ।' मैंने उसे कहा- 'भाई, प्रधानमंत्री जी कमोबेश हर महीने रेडियो पर मन की बात करते हैं और आपकी कंपनी ने रेडियो बनाना ही बंद कर दिया ।'

बहरहाल मैंने फैसला किया कि खुद कोशिश की जाए । मैंने बापूजी नगर एवं शहीद नगर स्थित पूरे इलेक्ट्रॉनिक्स मार्केट को छान मारा लेकिन एक भी मैकेनिक न मिला जो रेडियो बना सके । इलेक्ट्रॉनिक्स के नाम पर हर जगह मोबाइल ही मोबाइल है - मोबाइल शॉप, मोबाइल रिपेयर सेंटर और मोबाइल शोरूम । अब आपको समझ आ रहा होगा कि मैं वर्तमान स्मार्ट मोबाइल फोन को मोबाइल का होमो सैपियंस वर्जन क्यों कहता हूँ । जैसे होमो सैपियंस ने दुनिया से लाखों जन्तुओं का सफाया कर दिया, वैसा ही कारनामा इलेक्ट्रॉनिक्स की दुनिया में स्मार्ट फोन ने किया है । अभी पच्चीस साल पहले दिखने वाले पी.सी.ओ. का हाल डायनासोर जैसा हो गया है ।

परिवर्तन और वक्त किसी के लिए बेहद क्रूर होते हैं तो किसी के लिए बेहद मुनासिब लेकिन मुझे नहीं पता था कि मेरा प्यारा रेडियो भी इतनी जल्दी इलेक्ट्रॉनिक्स वर्ल्ड के इस भस्मासुर का शिकार हो जाएगा ।

गरीबी

श्री नवीन कुमार चौबे

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

निवाले को रोटी नहीं
बदन पर पूरे कपड़े नहीं
सड़क को है अपना बनाया
जो रहने को अड़्डे नहीं

इसमें समाज का गुरुर है
इसकी तो किस्मत भी मजबूर है
बड़ी अजीब है इनकी कहानी
क्या बचपन, क्या जवानी

ये बचपन में ही बड़े हो जाते
दुनिया से लड़ाई में खड़े हो जाते
जिन हाथों में होने चाहिए कॉपी-किताब
उन्हें मिलता है बस गरीबी का खिताब

लाचारी से बुरी तरह
हर ओर से कसे हैं ये
इस कठोर दुनिया में
बुरे फँसे हैं ये

सिक्के कम्बल दान कर
सिर्फ मन की गरीबी दूर हो सके
दुनिया में फैली बीमारी ये
चंद दवाओं से मिटनी नहीं

फुर्सत से देखना कभी
आँखों में गहराई उम्मीद की
हाथ खाली भले इनके
आँखें हमेशा भरी

वक्त का नियम है ये
वो इनके लिए कभी न बदले
गुजर कर बस तसल्ली देता
चाहे ये जो भी कर ले

पीढ़ी दर पीढ़ी को सौंपी जाती
ये गरीबी की संपत्ति
बड़ी पुरानी रीत ये
गरीब जीते चाहे न जीते
पर हार नहीं सकती
गरीबी कभी, गरीबी कभी ।

हिसाब क्या दूँ

श्री गोविन्द दीप

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बचपन से अब तक के सफर का
हिसाब क्या दूँ
वो कितनी बार माँ से छुपकर
मिठाई खाने का
वो कितनी बार पापा से बचकर
टी.वी. देखने, खेलने जाने का
हिसाब क्या दूँ

बचपन में वो मेरे न पढ़ने या
बात न सुनने पर माँ के छुपकर रोने का
हिसाब क्या दूँ
मेरे पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़े होने का
माँ का वो मन ही मन
दिन-रात सपने देखने का
हिसाब क्या दूँ

मेरे परीक्षा पर रात-रात भर
माँ के जगने का
हिसाब क्या दूँ
हमारे लिए दिन-रात मेहनत करने का
ताकि हमें अच्छी शिक्षा मिले
किसी भी चीज़ की कमी ना हो
पापा के उस मेहनत का
हिसाब क्या दूँ

बड़े भाई और बहन से
सारी ज्ञान की बातें सीखने का
हिसाब क्या दूँ
वो हर मुश्किल से मुश्किल समय पर
मेरे साथ ढाल बनकर साथ खड़े रहने का
हिसाब क्या दूँ

जो इतनी बड़ी दुनिया में
मुझे अकेले न होने का अहसास दिलाते हैं
जो हर वक्त हर खुशी, हर दुख में
मेरे साथ रहने का विश्वास दिलाते हैं
और जो मेरे सभी अच्छे और बुरे से बुरे समय
पर भी
ये कहे कि तू चिंता मत कर, हम तुम्हारे साथ
हैं,
सब ठीक हो जाएगा
इन अनमोल शब्दों का
हिसाब क्या दूँ

मुझे भी आने दो दुनिया में

श्री निरंजन परिडा

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे भी आने दो दुनिया में
मुझे क्यों मारते हो?
बेटी हूँ तो इसमें
मेरा कसूर क्या है?
उस विधाता ने ही तो
मुझको भी गढ़ा है।

मुझे भी माँ
अपने से लिपटने का,
एक मौका दो ना
पापा के कंधों पर
उछलने दो ना।

मैं भी खेलौनों से
खेलना चाहती हूँ,
हाथ-पैरों में बेड़े
नहीं पहनना चाहती हूँ।

मैं भी चाहती हूँ
उतरे नजर मेरी,
लगे काजल
मेरी आँखों में,
और माथे पे टीके।

हो मेरा भव्य स्वागत
सजें वंदनवारें,
बजे ढोल-शहनाई
मने जन्मदिन मेरा,
जैसे कि उत्सव
हो कोई आया।

सजाऊँगी मैं भी
कभी सपने
तुम्हारे आँगन की,
करूँगी पूरे
सारे अरमां
तुम्हारे मन की।

करूँगी नाम ऊँचा
अपने पुरखों की,
विश्वास रखो,
कभी शिकायत का,
कोई मौका नहीं दूँगी।
मुझे भी आने दो दुनिया में.....

आस्था और स्वास्थ्य

श्री दीपक कुमार दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आजकल की भागदौड़ वाली जिंदगी के लिए स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है। हम सभी जानते हैं, बचपन से सुनते हैं, अपने प्राथमिक विद्यालय के अध्ययन से लेकर कार्यालय में काम करने तक कि 'स्वास्थ्य ही धन है'। कभी किसी को प्रणाम करते हैं तो हमें स्वस्थ रहने का ही आशीर्वाद मिलता है। कभी किसी को आशीर्वाद देते हुए यह नहीं सुना है कि धनवान बनो, बल्कि हमेशा उनके मुँह से यही निकलता है कि खुश रहो, स्वस्थ रहो। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी अपने कार्यकाल के प्रथम वर्ष से ही सर्वप्रथम देशवासियों को स्वस्थ रहने का ही संदेश दिया। यही नहीं सरकार ने स्वास्थ्य पर बहुत सारी योजनाएं/कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। वर्ष 2014 में सरकार द्वारा चलाया गया 'स्वच्छ भारत मिशन' उसी की ओर एक सफल प्रयास है। योग, प्राणायाम, व्यायाम आदि पर ध्यान देने के लिए लोगों को प्रेरित किया। आज अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, जो प्रत्येक वर्ष 23 जून को मनाया जाता है, हमारे प्यारे देश भारत की ही देन है। इसके लिए हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

आप सभी सोचते होंगे कि मैं आस्था की बात करने वाला था लेकिन स्वास्थ्य की बातें क्यों कर रहा हूँ। मैं अपने आप को पीछे ले जाता हूँ। आजकल हम अपने ही धर्म, अपने रीति-रिवाजों, अपनी आस्था इत्यादि के बारे में सोचते हैं, उसका ही सम्मान और आदर करते हैं। प्रत्येक दिन अखबार में, न्यूज चैनलों में, इंटरनेट में आस्था के नाम पर मार-काट, लड़ाई-झगड़े इत्यादि के समाचार मिलते हैं। लोग एक-दूसरे के धर्म-आस्था को महत्व नहीं देते हैं, आस्था और धर्म के नाम पर अपनी कुर्सी सलामत रखना चाहते हैं लेकिन मेरे विचार से सभी धर्मों, सभी आस्थाओं का सिर्फ एक ही महत्व है कि लोग स्वस्थ रहें।

मैं तो यही कहना चाहूँगा कि हमारे पूर्वजों ने हमारे स्वास्थ्य को आस्था के साथ जोड़ दिया था ताकि इनका पालन कर लोग हमेशा स्वस्थ रहें, खुश रहें। इस पृथ्वी पर मुख्य रूप से चार धर्म के लोग रहते हैं- हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई। सभी धर्मों का सही रूप से पालन करना, उसका सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि लोग धर्म का पालन करें, ताकि लोग स्वस्थ रहें। जैसा कि

हम हिंदू धर्म की बात करते हैं, हिंदू धर्म में पूजा-पाठ करते हैं तो हमें बहुत सारे नियमों का पालन करना पड़ता है, जैसे- नहा-धोकर साफ-सुथरे कपड़े पहनकर मंदिर जाना, माथे पर तिलक लगाना, उपवास करना, भगवान के आगे सिर झुकाकर प्रणाम करना इत्यादि । अगर हम इस सभी बातों का सही ढंग से पालन करते हैं तो कहीं न कहीं उसका सिर्फ और सिर्फ एक ही महत्व है कि हम स्वस्थ रहें । इसलिए हमारे पूर्वजों ने इसे आस्था के साथ जोड़ दिया था । इसी तरह मुस्लिम धर्म में दिन में पाँच वक्त नमाज पढ़ना, ईसाई धर्म में प्रत्येक रविवार को चर्च में जाकर प्रार्थना करना, सिख धर्म में गुरुद्वारे में जाकर लोगों की सेवा करना इत्यादि के नियम हैं । धर्म और आस्था लोगों को सही ढंग से जीने की राह बताती है ।

अब आप कहेंगे कि आस्था के साथ क्यों जोड़ा तो मैं यह कहना चाहूँगा कि जब मंदिर में जाते हैं तो क्या सिर्फ भगवान के दर्शन करने जाते हैं? हम जब जाते हैं मन ही मन भगवान से यह जरूर माँगते हैं कि भगवान हमारी मनोकामना पूरी करें और जहाँ मनोकामनाओं की बात आती है तो वे तो अनगिनत हैं । अर्थात् हम एक तरह से डर के भगवान के पास जाते हैं। यही नहीं हमें परिवार में भी आस्था के नाम पर बहुत सारे नियमों का पालन करना पड़ता है, आज गुरुवार है, आज शनिवार है, आज यह नहीं खाना चाहिए, उपवास रहना चाहिए इत्यादि । सभी के पीछे सिर्फ और सिर्फ एक ही मकसद है कि हम स्वस्थ कैसे रहें ।

अर्थात् भगवान और आस्था जैसे हमें स्वस्थ रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं तो प्रत्येक देश की आर्थिक स्थिति को स्वस्थ बनाए रखने के लिए व्यवस्थित विभाग, जैसे- ऑडिट, सतर्कता, प्रवर्तन निदेशालय, केंद्रीय जाँच ब्यूरो इत्यादि हैं । अगर इन सबका डर नहीं हो तो देश में सरकार का कार्यक्रम कभी भी सुचारु रूप से नहीं चल सकता क्योंकि किसी देश की आर्थिक स्थिति तभी ठीक हो सकती है जब उस देश का सरकारी काम-काज सुचारु रूप से चले । इसी उद्देश्य से ये जाँच संबंधी विभाग बनाए गए हैं । अगर सरकारी तंत्र को इन विभागों का डर नहीं होता तो न जाने क्या से क्या हो जाता ।

अतः अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि जैसे हमें स्वस्थ रहने के लिए आस्था रूपी आचरण का पालन करना जरूरी है उसी प्रकार देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाए रखने, सरकार के सभी काम-काज सुचारु रूप से चलाने, देश की तरक्की और देश के भविष्य के लिए सरकारी तंत्र में ऑडिट, सतर्कता, प्रवर्तन निदेशालय, केंद्रीय जाँच ब्यूरो इत्यादि का डर हो तथा इनका आदर सम्मान हो ।

अमर बलिदान

सुश्री स्वास्तिक षडंगी
पिता- श्री अजय कुमार षडंगी

देवताओं के गुरु वृहस्पति के पुत्र थे कच । मृत्यु संजीवनी मंत्र सीखने के लिए कच अपने जीवन को खतरे में डालकर राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य का शिष्य बन गया क्योंकि ये मंत्र देवताओं को मालूम नहीं था । इस मंत्र के कारण राक्षस देवताओं को बार-बार परास्त कर देते थे। शुक्राचार्य ने कच को अपना शिष्य बना लिया परंतु ये बात जब राक्षसों को पता चली तो राक्षसों ने कच को मारकर जंगल में फेंक दिया । गुरु शुक्राचार्य ने मृत्यु संजीवनी मंत्र से कच को बचा लिया। दूसरी बार भी वही बात हुई परंतु तीसरी बार राक्षसों ने कच को मारकर उसकी राख को शुक्राचार्य को पिला दिया । गुरु शुक्राचार्य की बेटी देवयानी कच को बहुत प्यार करती थी इसलिए देवयानी ने कच को बचाने के लिए अपने पिता को मजबूर कर दिया । गुरु शुक्राचार्य ने मजबूर होकर अपने पेट में ही कच को मृत्यु संजीवनी मंत्र सिखा दिया। कच गुरु शुक्राचार्य का पेट फाड़कर बाहर निकला और संजीवनी विद्या से गुरु को पुनः जीवित कर दिया ।

जब देवयानी ने कच को शादी करने को कहा तो कच ने मना कर दिया क्योंकि गुरु शुक्राचार्य के पेट से दूसरा जन्म लेने के कारण कच शुक्राचार्य का पुत्र बन गया था । देवयानी ने गुस्से में आकर कच को शाप दे दिया कि जिस विद्या के लिए तुम यहाँ आए थे वही विद्या जब भी किसी को बताओगे, तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी । कच ने अपने पिता वृहस्पति को मृत्यु संजीवनी मंत्र बता दिया और उसकी मृत्यु हो गई । अपने पिता के सम्मान और देवताओं को सुरक्षा देने के लिए कच ने अपना जीवन दे दिया।

वक्त का अभाव

श्रीमती नेहा कुमारी
पति- श्री प्रभात रंजन

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं।

दिन रात दौड़ती दुनिया में,
जिंदगी के लिए वक्त नहीं।

मम्मी की लोरियों का एहसास तो है,
लेकिन मम्मी को मम्मी कहने का वक्त नहीं ।

सारे रिश्तों को तो हम मार चुके हैं,
अब उन्हें दफनाने का भी वक्त नहीं ।

सारे नाम मोबाइल में हैं,
लेकिन मित्रों के लिए वक्त नहीं ।

दूसरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं ।

आँखों में है नींद बड़ी,
पर सोने का भी वक्त नहीं।

दिल है गमों से भरा हुआ,
पर रोने का भी वक्त नहीं।

पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने का भी वक्त नहीं।

प्यारे एहसास की क्या कद्र करें,
जबकि अपने सपनों के लिए भी वक्त नहीं।

कहानी की कहानी

श्री सौरभ दास
सहायक पर्यवेक्षक

-1-

“बाबाई दा, आप एक दिन बातों-बातों में बोल रहे थे ना कि आप अपने बचपन में स्कूल मैगज़ीन में कहानी लिखते थे..” इको पार्क में पूरे दो चक्कर जॉगिंग करने के बाद मैं जैसे ही लेकसाइड बेंच में आकर बैठा, रजत ने मुझसे पूछा।

रजत हमारे ही मोहल्ला में रहता है। वो और उसके कुछ दोस्त मिलकर एक छोटा-मोटा मासिक मैगज़ीन पिछले कुछ सालों से निकाल रहे हैं, यह तो मुझे पता था पर उसके द्वारा पूछे गए सवाल का कारण मुझे नहीं पता था।

“हां, बचपन में लिखता तो था, पर पूछ क्यों रहे हो?”

“दादा, बहुत समस्या हो गयी है। दुर्गा पूजा वाले वार्षिक मैगज़ीन के लिए रचना देने का लास्ट डेट है दो दिनों में.... पर वो फेमस राइटर ‘बुद्धदेब बसु’ हैं ना, उन्होंने कहा है कि रचना दो दिन में नहीं दे पाएँगे। इधर पब्लिशर और प्रिंटिंग प्रेस से डेट फिक्स्ड है... हमें दो दिन के बाद ड्राफ्ट कॉपी देनी ही देनी है।”

“सब ठीक है... पर इसमें मैं क्या करूं?” मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि रजत चाहता क्या है।

“बाबाई दा प्लीज..प्लीज..आप एक रचना दे दो.... हमें पता है कि आप अच्छा लिख सकते हो.. हमें भी स्लॉट पूरा करना है.. दो दिन में एक रचना के लिए अब कहां-कहां फिरो...!!”

-2-

बहुत दिनों के बाद आसमान मुझे ज्यादा नीला लगने लगा, हवा ज्यादा मीठी लगने लगी। मम्मी का सुबह-सुबह कल के सीरियल का रिपीट टेलीकास्ट फिर से उसी रुचि के साथ देखना मुझे

बुरा नहीं लगा.... बीवी के हाथ का खाना आज अमृत जैसा लगा। वास्तव में मैं इतना खुश था कि मेरे 8 महीने के बेटे की पॉटी भी मैंने आज नाक में बिना हाथ लगाए साफ किया।

“बाबाई दा...दो दिन में एक रचना... प्लीज..” रजत की यही बात दिमाग में घूम रही थी। सोचा ऑफिस के लंच टाइम में बैठकर रचना लिखूँगा। “ऑफिस से आते वक्त कोको के लिए पैंपर्स लेकर आना...” बीवी ने इसी बीच फरमाइश कर दी।

मैं सरकारी दफ्तर के बिल्स डिपार्टमेंट में नौकरी करता हूँ । काम तो रहता है पर आज लंच टाइम में रचना लिखना ही है.. हाथ में सिर्फ दो दिन हैं।

“सौरभ जी... आपको सर बुला रहे हैं,” ऑफिस में आते ही ऑफिस के एमटीएस निर्मल जी ने बताया । मैं सर के चेंबर में गया। “सौरभ, वो डीजी सर का इनकम टैक्स वाला फॉर्म-16 तैयार हो गया है क्या ..?” सर ने पूछा ।

“नहीं सर...” मैंने कहा ।

“अभी तक नहीं हुआ....!!” सर थोड़ा गुस्सा हो गए...“सुनो लंच टाइम में वो तैयार करके रखो । 4:00 बजे वो मुझे अपने टेबल पर चाहिए..।”

लंच टाइम में काम करना पड़ेगा...!! हे भगवान...!! रचना कब लिखूँगा...?अगर मेरी रचना मैगज़ीन में पब्लिश हुई और अगर वह लोगों को पसंद आयी तो इस ऑफिस का भी नाम रोशन होगा...लोग बोलेंगे राइटर सौरभ इसी ऑफिस में नौकरी करते हैं ।

नहीं...यह मैं बोल नहीं पाया...दिल में ही यह बात रह गयी। चुपचाप उतरा हुआ चेहरा लेकर मैं अपनी सीट पर आकर बैठ गया। अब मैं समझा कि लिखना एक फुल टाइम जॉब होता है। ऑफिस में नौकरी करते-करते राइटर बनना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है।

“कोई रोको ना दीवाने को...,”मेरे मोबाइल का रिंगटोन बज रहा है । स्क्रीन पर रजत का नाम आ रहा है ।“हाँ रजत बोलो...”मैंने फोन उठाया ।

“बाबई दा... याद है ना... कल शाम तक रचना चाहिए... लिख रहे हैं ना...” रजत की आवाज में चिंता थी। “रजत.. भाई तुम तो जानते हो, ऑफिस में कितना काम होता है । घर में भी तुम्हारा भतीजा परेशान करता है... टाइम कहाँ है मेरे पास...” थोड़ा अपनी बातों का वजन बढ़ाया

मैंने। “नहीं बाबई दा, नहीं.. आप लिख पाओगे मैं जानता हूँ..” फिर से रजत आग्रह करने लगा। “ओके.. ओके.. लिखूँगा.. लिखूँगा..” फोन काट दिया मैंने। सोचा ऑफिस से घर जाकर लिखूँगा वो रचना।

-3-

घर में जैसे ही पहुँचा, देखा कि सोफे में बैठकर मम्मी रो रही हैं। “क्या हुआ? मम्मी रो क्यों रही हैं..?” मैंने पूछा। “देख ना.. रजनी का पति उसको तलाक दे देगा। अब दो बच्चों को लेकर कहाँ जाएगी रजनी...क्या करेगी..” मम्मी के आँसू रुक नहीं रहे थे। ओह, किसी का तलाक होना सच में दुःख की बात है, “कौन है मम्मी यह रजनी?” मुझे अपने रिश्तेदारों में रजनी किसी का नाम है, याद नहीं आ रहा था।

“रजनी...उसका पति सिर्फ मेरा है सीरियल का हीरोइन रजनी। देख ना, उसका पति...”

“मम्मी प्लीज.....” मम्मी को बात खत्म नहीं करने दिया मैंने, “सीरियल देख कर रो रही हो”, गुस्सा आ गया मुझे। उधर सही समय के अंदर मुझे रचना लिखना है और इधर उसी समय में से दस मिनट नष्ट हो गए, गुस्सा तो आएगा ही। बाथरूम से फ्रेश होकर एक चाय का आर्डर बीवी को देकर, नींद में सोते हुए बेटे को एक किस देकर मैं लाइब्रेरी रूम में जाकर बैठा, रचना अभी लिखना ही है।

आ रही है... आ रही है... एक कहानी दिमाग में आ रही है। हीरो का नाम होगा लोकेश और वो गांव में रहता है और हीरोइन नंदिनी, वह...

“कोको का पैंपर्स लाए हो?” चाय मेरे टेबल में रखते हुए बीवी ने पूछा। उसके इस प्रश्न से जो छोटा सा कहानी का प्लॉट दिमाग में आ रहा था, भाग गया। गुस्सा आ गया मुझे, साथ ही साथ डर भी लगा क्योंकि बेटे का पैंपर्स लाना मैं भूल गया था।

“नहीं लाया, कल लेकर आऊँगा”, बीवी से बिना आँख मिलाए मैंने जबाब दिया।

“क्या!! नहीं लाए!! अभी जाओ, अभी पैंपर्स लेकर आओ”, 65 डेसिबल के ऊपर चिल्लाई मेरी बीवी।

“सुनो ना, कल शाम तक एक रचना लिखना है मुझे। अभी मुझे लिखने दो, कल मैं पैंपर्स ला दूँगा”, इस बार आंखों में आंखें डाल कर बोला मैंने ।

बीवी की आवाज 100 डेसिबल तक पहुँच गयी, “लिख रहे हो तो क्या जगत का उद्धार कर रहे हो? तुम क्या रवींद्रनाथ टैगोर बनोगे? अभी जाओ, पैंपर्स लेकर आओ।” चुपचाप घर से मार्केट के लिए निकला मैं, समझ गया राइटर लोगों को शादी नहीं करनी चाहिए । बीवी-बच्चों को संभाल के फिर लिखना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है । सोचा कल ऑफिस ही नहीं जाऊँगा । कल पूरा दिन लाइब्रेरी में बैठकर लिखूँगा ।

-4-

सुबह 6:00 बजे नींद से उठा । आज कोई जॉगिंग नहीं, सीधे लाइब्रेरी में शांत दिमाग से लिखना शुरू किया मैंने । लिख रहा हूँ मैं एक प्रेम कहानी...लोकेश और नंदिनी की प्रेम कहानी...

“यह लो लिस्ट, यह सब बाजार से जल्दी लेकर आओ । आज लौकी कालिया बनाऊँगी।” बीवी की इस फरमाइश से लिखने की खुशी झट से दुख में बदल गयी क्योंकि आज फिर से मेरी बीवी कुछ नया खाना पकाएगी । मेरी बीवी का किचन अगर रेस्टोरेंट है तो मैं उस रेस्टोरेंट का वन एंड ओनली कस्टमर हूँ । अगर मेरी बीवी का किचन कोई लेबोरेटरी है, तो मैं उस लेबोरेटरी का गिनी पिग हूँ ।

“क्या जरूरत है डार्लिंग, आज नॉर्मल दाल रोटी पकाओ ना.. वो सब नया पकाने की तकलीफ क्यों करोगी,” अपनी आवाज में एक लीटर प्यार मिलाया मैंने ।

पर मेरी बीवी भी कम नहीं है, मिलावटी चीज को जल्दी पकड़ लेती है, “एक घंटे में मुझे ये सब चाहिए।” हाई कोर्ट के जज की तरह वह आदेश सुना कर चली गयी, पालन करने के अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं था ।

सुबह के 11:00 बजे हैं और बाजार से लौकी कालिया का सारा सामान ला दिया है । अब फिर से मेरे दिमाग में लोकेश और नंदिनी... मेरी रचना के हीरो हीरोइन... कहानी लिखना शुरू किया मैंने । “कोई रोको ना दीवाने को...” फोन स्क्रीन पर ऑफिस के सर का नंबर । हे भगवान.. ऑफिस में फोन करके “मैं थोड़ा बीमार हूँ, सर... एक दिन का सी.एल. ले रहा हूँ”, ये बताने का

प्लान बनाया था मैंने पर भूल गया । “सर गुड मॉर्निंग, बोलिए सर”, मैंने थोड़ा सा डर-डर के फोन उठाया । “क्या हुआ सौरभ, ऑफिस क्यों नहीं आए,” सर ने पूछा ।

“सर, थोड़ा बीमार हूँ। एक दिन का सीएल एप्लीकेशन भेज दूँगा सर,” जवाब दिया मैंने ।

“बीमार हो!! कल तो तुम तंदुरुस्त थे सौरभ, अचानक तुम्हें कौन सी बीमारी हो गयी।”

सर ने मेरा झूठ पकड़ लिया क्या? बचपन में स्कूल प्ले में सीखा हुआ एक्टिंग स्किल अप्लाई करना पड़ा मुझे। खांसते-खांसते जवाब दिया, “हाँ सर, आज सुबह से बहुत खांसी हो रही है। कल दो आइसक्रीम खाया था सर, उसी का नतीजा लग रहा है,” फिर 5 सेकंड की एक खांसी जोड़ दी मैंने ।

“ठीक है..ठीक है.. डॉक्टर को दिखाओ । दवा लो, स्वस्थ होकर ऑफिस आ जाना,” फोन काट दिया सर ने । मैंने राहत का सांस ली । इसी दौरान रजत का मैसेज आ चुका था ‘रचना कितनी दूर दादा।’

“समय निकल नहीं पा रहा हूँ रजत ,कोशिश कर रहा हूँ...,” मैंने उत्तर दिया । दरअसल मैंने रजत को बताया नहीं कि रचना लगभग लिख चुका हूँ, राइटर हूँ भाई.., अपना भी एक वजन है। “शाम तक कुछ दे दीजिए दादा, मैगजीन का वह पन्ना खाली नहीं जाना है।” रजत का टेंशन समझ आ रहा था मुझे। “ठीक है.. ठीक है.. कोशिश में हूँ।” रिप्लाय करके मैंने फोन को स्विच ऑफ कर दिया । बार-बार फोन आने से लिखने की एकाग्रता भंग हो जाती है । अभी शांति से कहानी का अंत लिखूँगा ।

-5-

शाम के 6:00 बज चुके हैं और लोकेश नंदिनी का कहानी की अंत कैसा होगा समझ नहीं आ रहा है । पेट के अंदर लौकी कालिया अपना कारनामा दिखा रहा है । लंच के टाइम बीवी ने पूछा था कि कैसा बना है । लौकी कालिया को बेहतरीन बोलने के अलावा और कोई शब्द बोलने का हक नहीं था मुझे और मैंने वही किया । लोकेश नंदिनी... लोकेश नंदिनी...लिखना तो पड़ेगा...

“तू क्या कोई स्टोरी लिख रहा है बेटा-“ पीछे से मम्मी की आवाज आई ।

“हां मम्मी”, पीछे मुड़े बिना मैंने जवाब दिया ।

“तो तू सच में राइटर बन जाएगा बेटा”- फिर से मम्मी का सवाल ।

“हां मम्मी, यह स्टोरी मैगज़ीन में छपेगी और उसके नीचे मेरा नाम रहेगा”, इस बार भी पीछे मुड़े बिना जवाब दिया मैंने ।

“इसका मतलब तू भी सिद्धार्थ जैसा बंगले और कार का मालिक बन जाएगा बेटा?” मम्मी के सवाल खत्म ही नहीं हो रहे थे ।

“सिद्धार्थ ! कौन सिद्धार्थ मम्मी?” इस बार मैं पीछे मुड़ा ।

“सिद्धार्थ, फेमस राइटर सिद्धार्थ, तू नहीं जानता उसको? उसके पास दो बंगले हैं, कार है,” मम्मी के चेहरे पर खुशियां ही खुशियां थी पर मैं याद नहीं कर पा रहा था कि हमारे देश में सिद्धार्थ नाम का कौन सा फेमस राइटर है। “कौन सिद्धार्थ मम्मी?” मैंने फिर से पूछा ।

“अरे सिद्धार्थ, ‘*डायन सास नागिन बहू*’ सीरियल का हीरो सिद्धार्थ, वह तो..

“नहीं मम्मी नहीं, फिर से नहीं, बाहर जाओ...अभी बाहर जाओ,” जोर से बोला मैं।

“अरे सुन ना बेटा..ये जो सिद्धार्थ है ना, इसकी बीवी ना, रातों को नागिन बन जाती है और उसका...”

“मम्मी...मम्मी...तुम अभी जाओगी कि मैं निकल जाऊं,” इस बार बहुत जोर से चिल्लाया मैं क्योंकि गुस्सा मेरे सर के ऊपर चढ़ गया था ।

“ठीक है, ठीक है चिल्ला मत, मैं ही जा रही हूँ पर इतना गुस्सा मत कर । संतोष जी जैसा हाई प्रेशर हो जायेगा तुझे,” मम्मी कमरे से जाने लगी ।

“अब यह संतोष जी कौन हैं? किसी सीरियल के हीरो या विलेन हैं, या पिशाच?” गुस्सा अभी भी कम नहीं हुआ था मेरा ।

“अरे नालायक क्या बोल रहा है तू, संतोष जी तेरे डैडी ।“

अब होश आया मुझे, मम्मी डैडी को संतोष जी कहकर बुलाती थी । डैडी को गुजरे हुए 15 साल हो गये । बहुत दिनों से मम्मी को संतोष जी बोलते हुए नहीं सुना था । बुरा लगा मुझे मम्मी के ऊपर चिल्ला कर । सही नहीं किया मैंने ।

“क्या लड़का है! डैडी का नाम भूल गया है। कल यह लड़का मेरा नाम भी भूल जाएगा।” अपने ही मन में बात करते हुए मम्मी कमरे से चली गई । मुझे सॉरी बोलना चाहिए मम्मी को । सॉरी बोलना भी है पर अभी नहीं, पहले यह रचना खत्म कर लेता हूँ फिर शांति से डिनर के टाइम मम्मी को गले लगाकर सॉरी बोल दूंगा ।

-6-

रात 9:30 बज चुके हैं । लोकेश-नंदिनी की प्रेम कहानी खत्म हुई, एक जबरदस्त नाम भी दे दिया है इस रचना को- ‘दो पल प्यार के’ । चलो, अभी रजत को फोन करके बोलता हूँ कि लेकर जाए रचना ।

अरे.. फोन तो स्विच ऑफ है । अब याद आया कि मैंने खुद उसको स्विच ऑफ कर दिया था ताकि कोई डिस्टर्ब ना कर सके लिखने के वक्त । मैंने फोन स्विच ऑन किया । अरे, यह क्या.. शाम 7:00 बजे से रजत का पाँच बार फोन आ चुका है, जरूर रचना के लिए । कितना उतावला है यह लड़का । मैंने उसको कॉल बैक किया, “हां रजत.. भाई मेरे, मैंने...”

रजत ने मेरी बात खत्म नहीं होने दी, बोलने लगा, “बाबाई दा, मैं कबसे फोन कर रहा हूँ । आपका फोन स्विच ऑफ आ रहा था ।”

“हां रजत, एकचुअली...”

“बाबाई दा, एकचुअली मैं एक बहुत खुशी की बात आपको बताने के लिए फोन कर रहा था । आज शाम 6:00 बजे के करीब बुद्ध देव बाबू का फोन आया था । उन्होंने हमारे मैगज़ीन के लिए एक कहानी लिखी है । वही रचना लेने के लिए मैं अभी उनके घर आया हूँ । हेलो बाबाई दा, आप सुन रहे हैं ना...”

“हां रजत सुन रहा हूँ.. बोलो...,” गले से आवाज नहीं निकल रही थी मेरी ।

“बाबाई दा, आज मैं बहुत खुश हूँ । आप तो जानते ही हैं बुद्धदेव बसु कितने बड़े राइटर हैं । उनकी रचना हमारे मैगज़ीन के लिए बहुत लाभदायक होगी । बाबाई दा, आई एम रियली सॉरी। आप इतने बिजी पर्सन हो, महत्वपूर्ण सरकारी दफ्तर में नौकरी करते हो, मुझे पता था आप के पास समय नहीं होगा कोई कहानी लिखने के लिए । फिर भी मैंने आपको परेशान किया । रियली सॉरी बाबाई दा.. बुद्धदेव सर आ गए हैं। मैं फोन रखता हूँ । कल जॉगिंग पार्क में मिलते हैं।” फोन काट दिया रजत ने ।

लाइब्रेरी रूम में मैं अकेला, तन्हा... अचानक चारों तरफ इतना सन्नाटा छा गया कि पत्ते गिरने की भी आवाज मुझे शायद सुनाई देती । सर चकराने लगा मेरा, आँखों के सामने थोड़ा सा अंधेरा भी छाने लगा । कुर्सी पर बैठ गया मैं । पिछले दो दिन के टेंशन में लो ब्लड प्रेशर हो गया होगा । गला भी सूखा-सूखा लगने लगा । सीने में एक दर्द सा महसूस किया मैंने । एसिडिटी हो गयी होगी ।

पर लो ब्लड प्रेशर और एसिडिटी होने से आँखों से दो बूंद पानी भी गिरता है क्या..??

विडंबना

सुश्री प्रेरणा किशोर
पिता- श्री जे. किशोर

एक रोज धूप कड़ी थी
फिर भी बदन को जला नहीं रही थी
रोशनी बहुत ज्यादा थी
फिर भी आँखें चिलमिला नहीं रही थी
ज़िंदगी के अंधेर में वह भी कम पड़ रही थी
अभिव्यक्ति पढ़ रही थी
पर अभिव्यक्त कर नहीं पा रही थी
रास्ते हजार थे
लेकिन मैं खुद उस विडंबना से बाहर न आना
चाहती थी ।

एक रोज बारिश मूसलाधार हो रही थी
फिर भी बदन को भिगा नहीं रही थी
चारों ओर वर्षा बहुत हो रही थी
फिर भी मुझे ठंडक नहीं पहुँचा रही थी
हृदय के वियोग की अग्नि को बुझाने के लिए
वह भी कम पड़ रही थी
अभिव्यक्ति पढ़ रही थी
पर अभिव्यक्त कर नहीं पा रही थी
रास्ते हजार थे
लेकिन मैं खुद उस विडंबना से बाहर न आना
चाहती थी ।

एक रोज़ बड़ी तेज बयार चल रही थी
फिर भी उसकी ठंडक हड्डियों को कड़का नहीं
रही थी

ठंड बहुत ज्यादा थी
फिर भी मुझे कंपकपा नहीं पा रही थी
जीवन ने इतना झंझोड़ दिया था कि वह मुझे
और झिंझोड़ न सकी
भवानी प्रसाद जी की अभिव्यक्ति पढ़ रही थी
पर अभिव्यक्त कर नहीं पा रही थी
रास्ते हजार थे
लेकिन मैं खुद उस विडंबना से बाहर न आना
चाहती थी ।

विवशता

श्री बिक्रम महापात्र

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

‘साब, केले ले लो...केले ले लो साब, बहुत अच्छे हैं । पैसे कम ले लूँगा...’

बीडीए मार्केट शाम होते ही चंचल हो जाता है । बहुत सारी दुकानें, बहुत सारे लोग, ऐसा लगता है कि कोई मेला लगा है । ये सब देखते ही मन को थोड़ा सुकून मिलता है इसलिए मैं रेलविहार से रेलसदन तक पैदल आता-जाता हूँ और कार्यालय के समय के उपरान्त घर लौटने के वक्त श्रीमती जी की फरमाइश रहती है राशन, सब्जी और दवाई वगैरह लेते हुए आने की । इसी कारण चल कर आने-जाने में भलाई है, जिससे दोनों तरफ से लाभ ही होता है । एक तो टहलना हो जाता है, दूसरा गाड़ी में पेट्रोल बच जाता है परन्तु मैं उन दिनों की बात बता रहा हूँ जब कोविड-19 की महामारी तांडव कर रही थी।

लॉकडाउन लागू हुआ तो हम कार्यालय रॉस्टर के तहत आते थे । दुकानें, बाजार सब सीमित अवधि के लिए खुलते थे । रास्ते के किनारे फलों के ठेले वाले खड़े रहते थे । उस दिन वो तेरह-चौदह साल का लड़का केले के ठेले के पास खड़े होकर बड़े अनुनय-विनय से आते-जाते लोगों को पुकार रहा था। कुछ लोग ठेले के पास आकर केले पर नजर डालते और आगे चले जाते । कुछ लोग दाम पूछकर मोल-भाव कर रहे थे। हमारे देश में ये आम बात है । मैंने जब उस लड़के से केले का दाम पूछा तो उसने बड़ी सहमी हुई सी आवाज में कहा- साब, चालीस रूपए दर्जन... पर आपको दो केले अलग से दूँगा। शायद वह सोच रहा था कि कहीं ये ग्राहक भी हाथ से निकल न जाए । मैं उसके पास गया और पूछा- तुम्हारा नाम क्या है बेटा? वह बोला- गोपाल । मैंने पूछा- पढ़ते हो या नहीं? वो बोला- नौवीं में पढ़ता हूँ । अभी तो स्कूल बंद है इसलिए मैं ही केले बेचता हूँ।

मैंने फिर पूछा- कोरोना के समय तो सभी लोगों ने मास्क पहन रखा है, तुमने क्यों नहीं पहना? उसने अपनेपन के भाव से कुछ कहा तो नहीं पर शरमाकर सर नीचे कर दिया । फिर मैंने कहा- ठीक है, मैं एक मास्क दूँगा, हर दिन पहनकर आना । उसने मुस्कराते हुए सर हिलाकर हामी भरी । फिर मैंने उससे उसके पिता के बारे में पूछा । उसका उत्तर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ ।

धीमी आवाज में उसने बताया कि उसके पिता अपाहिज हैं । एक दुर्घटना में उनके दोनों पैर चले गए । यह सब बताते हुए उसकी आँखें भर आई ।

फिर मुझे मेरा अपना काम याद आ गया, दवाई-सब्जी वगैरह लेना है । अगर एक भी सामान भूल गया तो श्रीमती जी सारा घर सर पर उठा लेंगी और फिर वही डायलॉग, चार सामान के लिए बोलो तो एक भूल ही जाते हो । आजकल भूलने की आदत जो पड़ गई है । मेरी सोच में ब्रेक लगाते हुए वह लड़का बोला- अपने केले ले लीजिए सर । मैं केले लेकर आगे चला गया।

उस दिन के बाद अक्सर मैं उस लड़के से मिलता रहता था और केले लेता था। एक दिन उसने अपनी माँ से मेरा परिचय कराया। एक भी दिन ऐसा नहीं गया कि मैं उस लड़के से ना मिलूँ। हर दो-तीन दिन में उससे एक दर्जन केले ले लेता था। घर में श्रीमती जी का भाषण सुनना पड़ता- सारे पैसे केले में ही लगा देंगे क्या? उसे क्या पता था कि मैं इस बहाने उस लड़के की अप्रत्यक्ष रूप से मदद करने की कोशिश कर रहा था ।

कुछ दिन बाद देखा तो न वह लड़का है, न उसका वह ठेला। दोनों कहाँ गए? फिर मैंने सोचा शायद गाँव चला गया हो। मैं भी उसे भूलता चला गया। एक दिन मेडिकल चेकअप के लिए मैं अस्पताल गया था। काउंटर पर खड़ा ही हुआ था कि पीछे से एक महिला के रोने की आवाज आई- मेरे बेटे को बचा लो साहब....। मैंने मुड़ कर पीछे देखा । यह तो उसी लड़के की माँ है ।

‘मेरे बेटे को कोरोना हुआ है...बहुत सीरियस है... डॉक्टर बोल रहे हैं कि बीस हजार रुपए लगेंगे । मेरे बेटे को बचा लीजिए साहब...’

उसकी बातें सुनकर मैं कुछ देर तक स्तब्ध हो गया, फिर उससे बोला- आपके बेटे को कुछ नहीं होगा । काउंटर पर बैठी रिसेप्शनिस्ट को मेरा एटीएम कार्ड दिया और डॉक्टर को कोविड वार्ड में जाते देखता रहा ।

उदास न हो

श्री प्रभात रंजन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मेरे नदीम मेरे हमसफर, उदास न हो।
कठिन सही तेरी मंजिल, मगर उदास न हो।

कदम कदम पर चट्टानें खड़ी रहें, लेकिन
जो चल निकलते हैं दरिया तो फिर नहीं रुकते।
हवाएँ कितनी भी टकराएँ आंधियाँ बनकर,
मगर घटाओं के परचम कभी नहीं झुकते।
मेरे नदीम मेरे हमसफर...

हर एक तलाश के रास्ते में मुश्किलें हैं, मगर
हर एक तलाश मुरादों के रंग लाती है।
हजारों चांद-सितारों का खून होता है
तब एक सुबह फिज़ाओं पे मुस्कुराती है।
मेरे नदीम मेरे हमसफर...

जो अपने खून को पानी बना नहीं सकते
वो जिंदगी में नया रंग ला नहीं सकते।
जो रास्ते के अन्धेरो से हार जाते हैं,
वो मंजिलों के उजालों को पा नहीं सकते।

मेरे नदीम मेरे हमसफर, उदास न हो।
कठिन सही तेरी मंजिल, मगर उदास न हो।

गाँव का बचपन

श्री राजु कुमार

आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

मेरा छोटा सा, प्यारा सा गाँव, दो ओर नदियों से घिरा, गाँव के चारों ओर लम्बे-लम्बे ताड़ के पेड़, छोटे-बड़े आम, अमरूद, बबूल, शीशम, पीपल के वृक्ष, अति मनमोहक दृश्य था। गाँव की कच्ची फिसलन वाली सड़कें, बारिश के दिनों में स्कूल से बचने के लिए दोस्तों संग फिसलना और कपड़े गंदे करना ताकि हमें स्कूल ना जाना पड़े। हमें पहले से पता होता था कि कुछ गालियाँ और तमाचे फिर पूरा दिन अपना। हमारे गाँव से स्कूल की दूरी एक किलोमीटर थी और जाने के लिए एकमात्र रास्ता नदी की पगडंडी थी। कभी-कभी तो जब तक स्कूल का समय बीत ना जाये, घर वापसी नहीं होती थी क्योंकि सभी दोस्त मिलकर नदी में तैरते और पेड़ों की सबसे ऊँची डाल से कूदते थे। कोई पेट के बल गिरता, कोई सर के बल, कोई रोते हुए घर जाता, कोई हँसते हुए। जो रोते हुए घर जाता, उसे सभी दोस्त चुप होने के बाद ही छोड़ते थे ताकि हमलोगों की घर में जो मरम्मत हो, वो कम हो। डर था पर हौसला बुलंद था। आने वाला वक्त अच्छा होगा या बुरा होगा कभी सोचा नहीं।

हमारे दोस्तों की एक मंडली हुआ करती थी, जिसमें लगभग 20 से 25 लड़के होते थे। उसका एक मुखिया भी होता था। अच्छे-बुरे कामों को कैसे करना है या करवाना है, वही तय करता था। पूरी मंडली के सभी लड़कों का अपना उपनाम होता था, जिसका नामकरण भी वही करता था। बटेसर, टीमला..... और ना जाने कितने नाम दिए जाते थे। बिना टेक्नोलॉजी के कहाँ से वो नाम खोजता था, आज तक समझ नहीं आया। वह जैसा पहले था, वैसा आज भी है। पिछली बार गाँव में मिला था तो हमने पूछ दिया- बाल-बच्चे कितने हैं। 'बस! भगवान की कृपा से तीन लड़कियाँ हैं।' चेहरे का भाव हमें सब समझा गया।

एक थे रामचंद्र बाबा, अब वो हमारे बीच नहीं रहे। हम सबका इनसे अलग लगाव होता था। इन्हें देखते ही हमलोगों के मन में चिढ़ाने की इच्छा जाग जाती थी और वे हमें गालियाँ देते पर किसी दिन नहीं मिलने पर पूछते, बवाली मण्डली कहाँ है और जब मिलते तो बोलते- 'आज इधर आए तो टाँगें तोड़ दूंगा।'

एक दिन की बात है, वे रोज की तरह रात में घर के बाहर चौकी पर सोये थे। सबको शरारत सूझी और रात के वक्त उनकी चौकी को घर के पास से उठाकर पास के ही खलिहान में डाल दिया और एक कुत्ते को पकड़कर उनकी चौकी के एक पाँव में लम्बी रस्सी से बांध दिया गया। उसके बाद उस कुत्ते को एक लठ्ठ से जोर से मारा गया। अब क्या, सभी लोग भागे और गली के

एक मोड़ पर रुक गए ताकि वहाँ से सबकुछ साफ-साफ दिख सके । कुत्ते का शोर सुनकर बाबा अपनी लाठी उठाकर जैसे ही अपने चौकी से उठे, कुत्ता चौकी को खींचता हुआ भागा जा रहा था। उन्हें बात समझते देर ना लगी। गालियाँ देते हुए उन्होंने चिल्लाना शुरू किया । गाँव के लोग अब जागने लगे और हमलोगों ने वो रात गाँव के बाहर महुए के पेड़ के ऊपर बिताई । उसके बाद हमलोगों के समूह ने बिखर के रहना शुरू किया, कभी भी इकट्ठे नहीं हुए क्योंकि उस रात की सुबह भी काली रात थी, हम बेहिसाब कूटे गए थे।

उस समय की बात ही कुछ और थी । लट्टू, कंचे, गुल्ली-डंडा, डोल-पत्ता, छुपम-छुपाई और ना जाने कितने खेल खेले। एक-दूसरे से लड़ना-झगड़ना, गाली-गलौज हर दिन होता और अगली सुबह फिर एक साथ उसी खेल में रम जाते थे। बेफ़िक्र, निर्विकार कल क्या खोया और आने वाले कल क्या पाएंगे कुछ सोचा ही नहीं। दुनिया में क्या हो रहा है, क्या होने वाला है, हमें क्या मतलब। आज का दिन मस्ती में निकल जाये, इससे ज्यादा कभी सोचा ही नहीं।

आज हमारे गाँव की भौतिक बनावट बदल गयी है। गाँव के बीचों-बीच से राज्यमार्ग 7 बन गया है । लगभग 25 % खेती की उपजाऊ जमीन पर अब गाड़ियाँ दौड़ती हैं । कुछ लोगों की पूरी जमीन ही चली गयी। सरकार के द्वारा मुआवजा दिया गया है पर उनलोगों के पास अब कोई काम नहीं है, बेरोजगार हो गए हैं। वो नदी जो कभी अपने तटबंध तोड़कर कितने ही गाँवों को डुबा जाती थी, आज वो भी सूख गयी है। कितने बड़े-बड़े पेड़ नदी के तटबंधों की मरम्मत और सड़कों की भेंट चढ़ गए। अब बचा है तो बस सनसनाती हुई गाड़ियों का शोर ।

बदलाव

श्री मानस रंजन जेना
लेखापरीक्षक

कहते हैं वक्त के साथ-साथ बदलाव चाहिए
जिंदगी की हर मोड़ पर एक नई पहचान चाहिए
औरों की तरह कामयाब भी तो आपको होना था
फिर क्यूँ आज उस बचपन और मासूमियत को तरस रहे हैं

बदलाव के नाम पर कहीं समझौता तो नहीं कर लिया
अपने सोच में कहीं मिलावट का जहर तो नहीं भर लिया
माना कि सही और गलत, समय के उलझे हुए प्रतिबिंब हैं
गाँधी के शहर में कहीं लेनिन का झंडा तो नहीं गाड़ दिया

हर बदलाव के आगाज से अब तो स्वार्थ की बू आने लगी है
तरक्की के नाम पर भ्रष्टाचार नजर आने लगा है
समाज के हित की कब्र पर बनाना नहीं है मुझे ताजमहल
अब तो खुद के शहर में भी घुटन सी होने लगी है ।

जिंदगी

श्री विमल टोपनो
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जिंदगी है दो पल की
हँसकर, मुस्कुराकर जियो इसको
फिर न आने वाला है ये दिन

आज बचपन, कल जवानी
फिर बुढ़ापा और सब खत्म
जो बीत गया सो बीत गया

क्यों करते हो आने वाले कल की
चिंता

खुलकर जियो आज और अभी
पता नहीं कल हो न हो ।

विजय

सुश्री स्नेहा राउत
पिता - श्री पूर्ण चंद्र राउत

कदम कदम बढ़ाए जा

डर को मात कर

मंजिल आएगी जरूर

इंतजार कर

कर प्रतीक्षा ज्ञान की

ज्ञान की, बलिदान की

रख विश्वास खुद पर

और हर सपना साकार कर

रुक ना जाना तू

इस कठिनाई को देखकर

डटे रहना वहीं तू

उस मुसीबत को चीर कर

पर याद उन लोगों को रखना

जिसने तुझे साहस दिया

जिसने तेरे लिए खुद को मिटा दिया

रख तू उनका मान अपने सर

और विजय को प्राप्त कर

कर्म का पुजारी बन

कर्म की साधना कर

समय को मत कम आँकना

तू मेहनत कर

जीवन का पाठ

सुश्री सागरिका साहू,
पिता- श्री गणेश्वर साहू

एक बार की बात है, संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे । उनका एक शिष्य, जो स्वभाव से थोड़ा क्रोधी था, उनके समक्ष आया और बोला- गुरुजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाए रखते हैं, न आप किसी पर क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं? कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए । संत बोले, मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ । 'मेरा रहस्य? वह क्या है गुरुजी?'- शिष्य ने आश्चर्य से पूछा ।

तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो, संत तुकाराम ने दुःखी होते हुए कहा । कोई और होता तो शिष्य ये बात मजाक में टाल सकता था पर स्वयं तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे टाल सकता था? शिष्य उदास हो गया और गुरु का आशीर्वाद लेकर वहाँ से चला गया । उस समय से शिष्य का स्वभाव बिल्कुल बदल सा गया। वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पर क्रोध नहीं करता, अपना ज्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता । वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया था और उनसे माफी माँगता ।

देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आए । शिष्य ने सोचा, चलो एक आखिरी बार गुरु के दर्शन कर आशीर्वाद लेते हैं । वह उनके समक्ष पहुँचा और बोला, 'गुरुजी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए।'

'मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है पुत्र । अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज हुए, उन्हें अपशब्द कहा?'- संत तुकाराम ने प्रश्न किया । 'नहीं- नहीं, बिल्कुल नहीं । मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, इसे बेकार की बातों में कैसे गँवा सकता था? मैं तो सबसे प्रेम से मिला और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था, उनसे क्षमा भी माँगी,' शिष्य तत्परता से बोला । संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले, 'बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है । मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ ।

शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने जीवन का पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था । उसने मन ही मन इस पाठ को याद रखने का प्रण किया और गुरु के दिखाए मार्ग पर आगे बढ़ गया।

आईना

श्री चंदन कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आईना, जो कुछ बोलता नहीं है, जिसे हम अपने घर के किसी दीवार पर लगा देते हैं, उसे कुछ पता नहीं होता है उस व्यक्ति के बारे में, जो अचानक आकर उसके सामने खड़ा हो जाता है परंतु कुछ न जानते हुए भी आईना ये बतला देता है कि वो व्यक्ति खुश है या उदास। कभी-कभी हम अपनी कुछ बातें अपने प्रिय मित्रों, घरवालों, रिश्तेदारों से छिपा लेते हैं परन्तु आईने से हम कुछ नहीं छिपा पाते हैं ।

जब किसी दिन हम किसी जरूरतमंद की मदद करते हैं और घर आकर आईने के सामने खड़े होते हैं तो हमारे चेहरे पर एक अजीब सी खुशी होती है और हमें लगता है कि आज हमने कुछ अच्छा काम किया है । दूसरी तरफ अगर हमने जान-बूझकर किसी को धोखा दिया है तो आईना ये भी बयान कर देता है कि आज तुमसे गलती हो गई है ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आपसे कुछ गलत काम हो जाता है और आपके दोस्त आपको खुश करने के लिए झूठ बोल देते हैं कि आपसे कुछ गलती नहीं हुई है परंतु आईना कभी झूठ नहीं बोलता है, वो हमेशा सत्य ही बोलेगा ।

इसके लिए हमें आईने के सामने खाली समय में अकेले खड़ा होना चाहिए कि आज मुझसे कोई गलती तो नहीं हुई है, वो सब बतला देगा और हमें कोशिश करनी चाहिए अपनी गलतियों को सुधारने की।

जल संरक्षण का महत्व

श्रीमती नीतू चन्द्रा

पति - श्री विभास चन्द्र

जैसा कि हम जानते हैं - जल ही जीवन है । जल के बिना जीवन संभव नहीं है । हमारे ग्रह पृथ्वी पर जीवन इसीलिए संभव हुआ क्योंकि यहाँ जल उपलब्ध है । जितनी भी प्राचीन सभ्यताएँ पनपीं, चाहे वह सिंधु घाटी की सभ्यता हो, हवांगहो नदी घाटी, नील नदी घाटी या दजला-फरात हो, ये सब नदियों के साये में ही पनपीं । आज वैज्ञानिक अन्य ग्रहों पर जीवन का पता लगाने के लिए वहाँ सबसे पहले जल की उपलब्धता का प्रमाण ढूँढ़ रहे हैं । इससे पता चलता है कि हमारे अस्तित्व के लिए जल का क्या महत्व है ।

भारत जैसे देश में जहाँ जनसंख्या इतनी ज्यादा है और उद्योगों का विकास तेजी से हो रहा है, जल की समस्या बढ़ती जा रही है । कई शहरों में सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद भी लोगों को शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध नहीं है । जल का स्तर जमीन में नीचे जाना दूसरी सबसे बड़ी चिंता का विषय है । अतः अब वक्त आ गया है कि न हम अब सिर्फ जल का उपयोग करने में सावधानियाँ बरतें बल्कि जल के संरक्षण के तौर-तरीकों को भी अपनाएँ ताकि आने वाली पीढ़ियाँ जल की भयावह कमी का सामना करने से बच सकें । जल संरक्षण के कुछ सरल उपाय हैं, जैसे -

1. हर नागरिक जल-संरक्षण हेतु जागरूक हो ।
2. शावर की जगह लोग बाल्टी में पानी भरकर स्नान करें ।
3. शेविंग करते समय नल बंद रखें ।
4. बर्तन धोने के लिए नल की जगह टब का उपयोग करें ।
5. हर गाँव और शहर में तालाब बनवाए जाने को प्राथमिकता दिया जाए ताकि जल का स्तर सामान्य बना रहे । साथ ही वर्षा के जल का संरक्षण भी होता रहे ।
6. गंदे जल का सिंचाई में उपयोग करके भी जल संरक्षण किया जा सकता है ।
7. जागरूकता अभियान चलाए जाएँ ।
8. वर्षा का जल छत पर संरक्षित करने हेतु टंकी बनाया जाए ।
9. रेनवाटर हार्वेस्टिंग तकनीक को अपनाया जाना चाहिए ताकि न केवल जल की कमी से निपटा जा सके बल्कि अतिरिक्त जल भी एकत्रित किया जा सके ।

10. व्यापक जल संरक्षण अभियान चलाया जाए ताकि लोग और खासकर बच्चे बूँद-बूँद पानी बचाना सीखें।

जल संरक्षण आज भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की समस्या है और कहा जा रहा है कि तीसरा विश्व युद्ध जल के लिए ही होगा । आप सभी को याद होगा कि 2019 में चेन्नई ने किस तरह जल की गंभीर कमी का सामना किया था । नीति आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर जल संरक्षण के उपाय नहीं किए गए तो बेंगलुरु, दिल्ली और हैदराबाद सहित 20 शहर अगले कुछ वर्षों में भीषण जल त्रासदी का सामना करेंगे । अगर जल संरक्षण के उपाय नहीं किए गए तो विश्व के कई शहर भुतहा शहर बन जाएँगे और लोगों को अपना घर-बार छोड़कर जाना पड़ेगा । अतः भलाई इसी में है कि वक्त रहते जल संरक्षण के महत्व को समझा जाए । आज आवश्यकता इसी बात की है कि विश्व का प्रत्येक इंसान जल संरक्षण को अपना कर्तव्य और उद्देश्य समझे, अन्यथा हमारे ग्रह को भी अन्य ग्रहों जैसा बनने में वक्त नहीं लगेगा ।

मध्यकालीन महान कवि रहीम ने अपने दोहों में जल के महत्व को कुछ यूँ बयान किया है-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सूँ ।

पानी गए न उबरे, मोती, मानुस, चून ॥

हर रंग हिंदुस्तान हो

सुश्री अनन्या परिडा
पिता - निरंजन परिडा

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
सर्वत्र तिरंगे की शान हो,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो ।

फौलादी बाजू वाले
जिसके वीर जवान हों,
खेतों में हरियाली लाते
जिसके सफल किसान हों,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो।

वीर शिवाजी और प्रताप की
बलिदानों का जहां बखान हो,
झांसी की रानी, वीर कुंवर के
साहस का अभिमान हो,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो ।

सागर जिसके चरणों को धोता
जिसका भाल हिमालय हो,
थार, कच्छ, लद्दाख समेटे
जो अपने हृदय स्थल में हो,
मिट्टी का कण-कण
जिसका स्वर्ण समान हो,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो।

सतपुरा, विंध्य और नीलगिरी
गंगासागर की मिलन स्थली हो,
चाय की बागानी खुशबू
लिए असम हिमालय हो,
प्राकृतिक सुंदरता को समेटे
जो अनुपम उपमान हो,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो ।

जहां लावणी और भांगड़ा
की जादुई थापें लगती हों,
कथकली, कुचीपुड़ी, ओडिशी
की मोहक सार्जें सजती हो,
जहां हर क्षेत्र, संस्कृति
भाषा का सम्मान हो,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो।

जहां बुद्ध, महावीर, गुरु गोविंद की
अलख जगाई जाती हो,
जहां सत्य, अहिंसा और प्रेम की
बात सिखाई जाती हो,
वसुधैव कुटुंबकम् के नारों से
जो धरती गुंजायमान हो,
सबके दिल में भारत माता
हर रंग हिंदुस्तान हो।

गुड न्यूज के बाद

श्रीमती रोमा कुमारी

पति- श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

गुड न्यूज तो घर में आ गई, अब समय था गुड न्यूज को पृथ्वी पर लाने का। गाँव में आज भी 90 से 95 प्रतिशत बच्चों का जन्म नॉर्मल डिलीवरी द्वारा होता है पर शहरों में आजकल सिजेरियन डिलीवरी का चलन है। आपके ना चाहते हुए भी डॉक्टरों के द्वारा ऐसा माहौल बना दिया जाता है कि आपको बाध्य हो कर सिजेरियन डिलीवरी ही करानी पड़ेगी। बात सिर्फ यहीं खत्म नहीं होती, सिजेरियन डिलीवरी करवाने के बाद भी डॉक्टर बच्चों में कुछ समस्या बता देते हैं, जिसके बाद बच्चे को एनआईसीयू में रखा जाता है और एनआईसीयू के नाम पर माँ-बाप से पैसे चार्ज किए जाते हैं और हॉस्पिटल के खर्च का बिल बढ़ाया जाता है। पहले बच्चे को जन्म देने के लिए माँ को सिर्फ अपने शरीर की सुंदरता का त्याग करना पड़ता था पर अब शरीर की सुंदरता के साथ-साथ अपने पेट पर चीरा भी लगवाना पड़ता है, जो बहुत ही कष्टदायक है। हमलोग अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं को पाने के लिए निजी अस्पताल की ओर रुख करते हैं पर निजी अस्पताल के डॉक्टर मृत्यु का डर दिखाकर मरीज़ को लूटते हैं। इससे मरीज़ को शारीरिक कष्ट तो होता ही है, साथ ही साथ आर्थिक नुकसान भी होता है।

बहुत सारी बाधाओं को पार करने के बाद घर में किलकारियां भी गूँजने लगीं। लोग कहते हैं कि घर में बच्चे के आने पर घर में खुशी का माहौल होता है पर माँ-बाप के लिए यह एक जंग की शुरुआत होती है। हम सभी अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा चाहते हैं लेकिन माता-पिता बनना हमेशा आसान नहीं होता। माता-पिता की जिम्मेदारी निभाना दुनिया का सबसे बड़ा काम है। बच्चा जिस दिन से जन्म लेता है, उस दिन से माता-पिता पर एक नई जिम्मेदारी आ जाती है, जिसे वे मरते दम तक निभाते हैं।

ना आँखों में नींद... ना दिल में करार.... बच्चा भी क्या चीज होती है यार....। जबसे बच्चा जन्म लेता है तबसे माँ-बाप के रातों की नींद गायब हो जाती है, दिन का चैन भी खत्म हो जाता

है। बच्चा रात में 4-5 बार स्तनपान करने के लिए उठता है। वह जितनी बार अपनी भूख मिटाने के लिए उठता है, उससे ज्यादा बार वह बिस्तर गीला करता है। माता-पिता रात भर बच्चे के पैंट बदलते-बदलते परेशान रहते हैं। रात में बच्चा दूध पीता है और सो जाता है। जब रात के चौथे पहर में पेरेंट्स की आँख लग जाती है, तब बच्चा उठ जाता है क्योंकि तब तक सवेरा हो जाता है। उस समय तक बच्चे का उठकर खेलने का समय हो जाता है। उस समय अगर माता-पिता में से कोई एक बच्चे के पास ना हो तो वह रोने लगता है। इस वक्त घर में अगर कोई रिश्तेदार हो तो बहुत सहूलियत होती है वरना एकल परिवारों में यह बहुत कठिन समय होता है। आधुनिक जीवन-शैली, छोटा परिवार एवं नौकरी-पेशा होने के कारण अपने घर से दूर रहने के कारण एकल परिवारों में बच्चों के लालन-पालन में बहुत दिक्कतें आती हैं। बच्चा परिवार के अन्य जनों का साथ घुल-मिल नहीं पाता है। बच्चों के लालन-पालन में माता-पिता कई बार स्वयं को अकेले पाते हैं। उन्हें बच्चे के लालन-पालन में कुछ पता नहीं होता। इस हाल में एकल माता-पिता डॉक्टर पर ज्यादा निर्भर हो जाते हैं। वे हरेक छोटी-मोटी समस्या (जैसे-बच्चे द्वारा साँस लेने में दिक्कत होना, जुकाम, दस्त, बच्चे के दाँत ना आना इत्यादि) के होने पर डॉक्टर से सलाह लेने के लिए चले जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में नए माता-पिता का डॉक्टर के पास आना-जाना लगा रहता है। बच्चे के मुँह में बोली नहीं होती है इसलिए वह कष्ट जाहिर करने के लिए रोने लगता है। ऐसे में नए माता-पिता को समझ में ही नहीं आता है कि बच्चा क्यों रो रहा है? या वह क्या चाहता है? नए माता-पिता जैसे भी होता है वे अपने हिसाब से बच्चे को पालने की कोशिश करते हैं। इन सब के दौरान माता-पिता को अपने लिए समय ही नहीं बचता। बहुत ही टाइट टाईम शेड्यूल होता है। कोई एक जन बच्चे के पास रहते हैं तभी दूसरा नित्यकर्म से निवृत्त हो पाता है या कोई एक बच्चे के साथ खेलता है तो दूसरा रसोई में खाना बना पाता है। हर हाल में माँ-बाप में से किसी एक व्यक्ति का बच्चे के पास रहना जरूरी होता है क्योंकि पेरेंट्स को यह डर लगा रहता है कि अगर कोई एक बच्चे के पास नहीं रहें तो बच्चा बेड पर से नीचे गिर जाएगा या फिर अगर जग गया है तो अपने मुँह में खेलते हुए कुछ डाल लेगा।

बच्चे के जन्म से कुछ महीनों तक माँ-बाप सिर्फ रात में परेशान रहते हैं पर कुछ महीनों के बाद तो वे दिन-रात दोनों समय परेशान रहते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वैसे-वैसे उसकी शैतानियाँ बढ़ती जाती हैं। शुरुआती महीनों में बच्चे को दूध पिलाकर जहाँ भी सुला दिया जाता है,

वह सो जाता है परंतु कुछ महीने के बाद जब वह घुटनों के बल चलने लगता है तो बेड तथा फर्श पर पड़ी हुई चीजों को तितर-बितर कर देता है। कभी-कभी बच्चे घुटनों के बल इतनी तेजी से चलते हैं कि आप उतनी तेजी से पैदल उसके पीछे भाग नहीं सकते । इस दौरान वह अपने कपड़ों को भी गंदा कर लेता है। वह वास्कोडिगामा की तरह हर दिन नई खोज पर निकल जाता है। कभी तकिए के नीचे, कभी बेड के अंदर, कभी अलमारी में, कभी सब्जी की टोकरी में, हमेशा कुछ न कुछ नई चीज ढूँढता रहता है। इस क्रम में वह सारे सामान को बिखेर देता है। बच्चे की माँ को हर रात बिखरे हुए सामानों को व्यवस्थित करना पड़ता है । फिर अगले दिन सुबह बच्चा सारे सामानों को पुनः अस्त-व्यस्त कर देता है। बच्चे द्वारा जरूरी सामानों को इधर-उधर फेंक देने के कारण माता-पिता को अब हर समान ऊँचाई पर बच्चों से छुपाकर रखना पड़ता है, ताकि बच्चे वहाँ पहुँच ना सकें। बच्चे के बड़े होने पर उसमें याददाश्त की क्षमता बढ़ जाती है । वह समान को छुपाने की जगह देख लेता है और उसे याद रख लेता है और उसे जब समय मिलता है तो उस समान को खोजने में जुट जाता है। इस उम्र तक बच्चा अपने माँ-बाप को पहचानने लगता है। अगर माँ-बाप दूसरे कमरे में छुप जाते हैं तो बच्चा उन्हें भी घूम-घूम कर खोजता रहता है । एकल परिवार में बच्चा अपने माँ-बाप को छोड़कर किसी और व्यक्ति के पास नहीं जाता है, हमेशा अपनी माँ से चिपका रहता है। इस दौरान जब कोई रिश्तेदार या पड़ोसी उसके घर आते हैं तो वह उन्हें देखकर रोने लगता है और उनकी गोद में भी नहीं जाता है। बच्चों को खेलने के लिए हमेशा नए-नए खिलौने चाहिए। हर खिलौना 4 से 5 दिन में बच्चों के लिए पुराना हो जाता है। फिर वह घर के दूसरे सामानों के प्रति आकर्षित होते हैं और उनसे खेलने की कोशिश करते हैं। इस तरह घर में खिलौनों का अंबार लग जाता है। बच्चे सिर्फ खिलौनों से खेलते ही नहीं बल्कि उसे तोड़ भी देते हैं। बहुत सारे खिलौनों को बच्चे मुँह में ले लेते हैं इससे इंफेक्शन का खतरा बना रहता है। बच्चों को तो चीजों का ज्ञान नहीं होता है इसलिए जमीन पर पड़ा हुआ कचरा या कुछ भी गंदी चीजों को उठाकर वह मुँह में डाल लेते हैं, कभी दवाई तो कभी तेल की शीशी, कभी पानी के बोतल का ढक्कन तो कभी कुछ और। कभी-कभी वह जमीन पर चलती हुई चींटियों, कीड़े-मकोड़ों इत्यादि को भी मुँह में डाल लेता है। जब बच्चे को मुँह में दाँत आ जाते हैं तो उनमें किसी भी चीज को कुतरने की प्रवृत्ति आ जाती है। वह हर वस्तु को कुतरने लगता है। कभी ईयर-फोन तो कभी चार्जर तो कभी टेबल-फैन के तारों को कुतरता है। वह अपने गले में पड़े हुए लॉकेट, कागज, किताब, सब्जियों, फलों इत्यादि को भी कुतरता है। किसी एक फल या सब्जी को कुतरने से कोई दिक्कत नहीं होती है पर बच्चे अपनी आदत के अनुसार सारे फलों और सब्जियों में अपने दाँतों के निशान

छोड़ देते हैं। इससे सारी सब्जियाँ और फल नष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी तो वह मिर्ची को भी कुतर देते हैं और जब उन्हें तीखा लगता है तो वे रोने लगते हैं।

कुछ महीनों के बाद जब बच्चा चलने लगता है तब उसकी शैतानियाँ और ज्यादा बढ़ जाती हैं। जब बच्चा जमीन पर रहता है तो वह बेड पर आने के लिए रोने लगता है और जब बेड पर बच्चे को चढ़ा दिया जाता है तो वह नीचे उतरने के लिए रोने लगता है। बच्चे नीचे ऊँचाई वाले प्लग/स्विच बोर्ड, टेबल फैन में अंगुली घुसाने की कोशिश करते हैं, जिससे उन्हें करंट लगने, उंगलियों के कटने, या चोट लगने का खतरा बना रहता है। कभी-कभी तो वे अनायास ही दरवाजे की कुंडी अंदर से लगा देते हैं और अपने आप को बंद कर लेते हैं। दरवाजा तो बंद हो जाता है पर वह कैसे खुलेगा यह उनको मालूम नहीं होता, फिर वे अंदर ही रोने लगते हैं। इस परिस्थिति में माता-पिता व्याकुल हो जाते हैं। उन्हें बड़ी सावधानी से दरवाजे की कुंडी को कटवाना पड़ता है। बच्चों में कुछ सामान को फेंकने की भी प्रवृत्ति आ जाती है। ऐसी स्थिति में वह घर के जरूरी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे-टीवी या एसी का रिमोट, मोबाइल, इत्यादि को फेंक देता है, जिससे पिता पर उन चीजों को दोबारा खरीदने के लिए आर्थिक बोझ बढ़ जाता है।

बच्चे पानी के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं, कभी अगर बाथरूम का दरवाजा खुला रह जाए तो वे दौड़ कर पानी से खेलने के लिए पहुँच जाते हैं। इस क्रम में उसके कपड़े भी भीग जाते हैं और कई बार तो उन्हें सर्दी भी लग जाती है। बच्चे के पिता जब ऑफिस के लिए तैयार होते हैं तो बच्चे उनकी पैंट पकड़ कर खड़े हो जाते हैं और उन्हें गोद में उठाने के लिए रोनी सूरत बनाते हैं। ममता-वश पिता बच्चे को गोद में उठा लेता है फिर वह गोदी से उतरने का नाम ही नहीं लेता है, फिर कलेजे पर पत्थर रखकर बच्चे को गोदी से उतारकर माँ को सौंपना पड़ता है। इस कारण कभी-कभी पिता को ऑफिस के लिए देरी भी हो जाती है। इसी तरह किचन में माँ के खाना बनाने के दौरान बच्चा किचन पहुँच जाता है और माँ की साड़ी पकड़कर उनसे लिपट जाता है। बच्चे की इस हरकत से किचन में उनके जलने का खतरा बना रहता है और माँ को किचन में काम करने में परेशानी होती है। कुछ माता-पिता यह चाहते हैं कि उनका बच्चा समय से पहले जल्दी चलने लगे। इसलिए आजकल बेबी-वाकर का चलन बढ़ गया है। वाकर पर भी अकेले बच्चों को बिठाना सुरक्षित नहीं है। वाकर पर बच्चे को बिठाने के बाद भी माता-पिता को उसकी निगरानी रखनी

पड़ती है। वाकर में चलने के दौरान कई बार बच्चे टेबल के अंदर या घर की तंग जगहों में फँस जाते हैं और फिर रोना शुरू। कई बार टेबल के अंदर वाकर चले जाने के कारण बच्चों को चोट भी लग जाता है।

बच्चों का खाने का कोई टाइम शेड्यूल नहीं होता है। उन्हें कभी भी भूख लग जाता है और उनके खाने के नखरे के बारे में तो मत ही पूछिए। उन्हें कोई भी पौष्टिक चीज पसंद नहीं होती। जब भी बच्चों को कुछ पौष्टिक चीजें खिलाई जाती हैं तो वे उल्टी कर देते हैं। कुछ बच्चे अपने मुँह के आकार से बड़ा खाने का टुकड़ा जैसे- कटा हुआ सेब, ड्राई फ्रूट्स इत्यादि अपने मुँह में डाल लेते हैं, जिससे उसके कंठ में उस वस्तु के अटकने का खतरा बना रहता है। बच्चों को हमेशा बाहरी चीजें अच्छी लगती हैं जैसे- केक, बिस्कुट, चिप्स इत्यादि। माता-पिता शिशु के विकास के लिए हमेशा चिंतित रहते हैं। बच्चे के जन्म के बाद माँ-बाप का सारा ध्यान अब बच्चे पर ही केंद्रित रहता है। माँ, बच्चे के पोषण के बारे में चिंतित रहती है तो पिता उसकी जरूरतों को पूरा करने में लगा रहता है। बच्चे मोबाइल और टीवी के प्रति बहुत ही आकर्षित होते हैं मोबाइल में अगर आप काम कर रहे हैं तो बच्चे उसे छीनने की कोशिश करेंगे। मोबाइल यूज करना माता-पिता की मजबूरी है। अगर आप मोबाइल को तकिए के नीचे या फिर अलमारी में छुपा कर रखेंगे तो कुछ समय बाद बच्चे उसे भी ढूँढ लेते हैं। इस हालात में मोबाइल पर काम करना कठिन हो जाता है। घर में अगर टीवी चल रहा हो तो बच्चे उसे बहुत गौर से देखते हैं, इससे उनके आँखों के खराब होने का खतरा बना रहता है। डॉक्टर की सलाह के अनुसार बच्चे को 2 वर्ष तक किसी भी प्रकार की स्क्रीन से दूर रखना चाहिए। पर क्या किया जाए... आज के युग में मोबाइल, कार्य शैली का एक अभिन्न अंग बनता जा रहा है, जिसे अलग करना बहुत मुश्किल है। आजकल मोबाइल से वीडियो कॉल का चलन भी बढ़ गया है। बहुत सारे रिश्तेदार जो दूर रहते हैं, वे बच्चों के साथ वीडियो कॉल पर बात करना चाहते हैं। बच्चों से वीडियो कॉल पर बातें करवाना भी एक कठिन काम है। एक तरफ मोबाइल में वीडियो को देखते रहना होता है तो दूसरी तरफ बच्चों की भी शारीरिक स्थिति देखनी पड़ती है। बच्चे के आ जाने से माता-पिता को टीवी देखना और मोबाइल का प्रयोग करना कम करना पड़ता है।

जो परिवार ग्राउंड फ्लोर को छोड़कर फर्स्ट या सेकंड फ्लोर पर रहते हैं, उनके लिए परेशानियाँ और बढ़ जाती हैं। नीचे जब कोई पोस्टमैन या कूरियर डिलीवरी ब्वॉय आता है तो उनसे पार्सल लेने के लिए माता-पिता को नीचे जाना पड़ता है। उस समय कभी-कभी बच्चा सोया रहता है तो ऐसी परिस्थिति में दो चीजें करनी पड़ती हैं- अगर बच्चा सो रहा है तो मजबूरी में घर का मुख्य दरवाजा लगाकर जाना पड़ता है या फिर बच्चे को गोद में उठाकर फिर सीढ़ियों से नीचे जाना पड़ता है और फिर उसे लेकर आना पड़ता है। ऐसे में माता-पिता का अच्छा व्यायाम हो जाता है। ऊपरी मंजिल पर रहने वाले माता-पिता को हमेशा अपने मेन गेट को बंद करके रखना पड़ता है, नहीं तो बच्चे बाहर आकर सीढ़ियों से नीचे गिर जाएंगे। धूप में कपड़े या अन्य चीजें सुखाने के लिए जब भी सबसे ऊपरी मंजिल पर जाना होता है तब माता-पिता को घर का मुख्य दरवाजा बंद रखना पड़ता है। इस स्थिति में दरवाजे में अगर दोनों तरफ से कुंडी लगाने की सुविधा हो तो अच्छा रहता है।

बच्चे के आने के बाद मां-बाप का निजी जीवन खत्म हो जाता है। वह सिर्फ बच्चे के लिए जीने लगते हैं। इस स्थिति में उन्हें हिंदी फिल्म के ये बोल याद आने लगते हैं:-

वो मेरी नींद, मेरा चैन मुझे लौटा दो..

वो मेरा प्यार, मेरा दर्द मुझे लौटा दो..

नींद जितनी भी मैंने खोयी है...

चैन जितना भी मैंने खोया है....

वो मेरी नींद, मेरा चैन मुझे लौटा दो..

वो मेरा प्यार, मेरा दर्द मुझे लौटा दो..

वो मेरे ख्वाब, मेरी याद मुझे लौटा दो.....

माता-पिता बच्चों के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देते हैं, कभी अपनी इच्छा तो कभी अपने व्यवसाय से समझौता करते हैं ताकि बच्चों की उचित परवरिश कर सकें। माँ-बाप एक ऐसी हस्ती

हैं जो अपने दुख-दर्द भुलाकर अपने बच्चे को जीवन भर खुश रखने का हौसला रखते हैं। माता-पिता अपने बच्चों के लिए कभी बूढ़े नहीं होते हैं और ना ही इनके बच्चे उनके लिए कभी बड़े होते हैं। माँ-बाप अपनी परवाह किये बिना अपने बच्चों को हमेशा खुशी देते हैं। समाज तथा अन्य रिश्तेदारों के लिए 'गुड न्यूज़, सच में एक खुशी की खबर होती है परंतु माँ-बाप के लिए यह एक चुनौती भरे सफर की शुरुआत होती है । दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह सांसारिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

गुरु के गुरु

सुश्री स्वागतिका साहू
पिता - श्री गणेश्वर साहू

बहुत समय पहले की बात है, किसी नगर में एक प्रभावशाली गुरु रहते थे । उनके पास शिक्षा लेने कई शिष्य आते थे । एक दिन एक शिष्य ने गुरु से सवाल किया - स्वामी जी, आपके गुरु कौन हैं, आपने किस गुरु से शिक्षा प्राप्त की है । गुरु शिष्य का सवाल सुनकर मुस्कुराए और बोले- मेरे हजारों गुरु हैं। यदि मैं उनके नाम गिनने बैठ जाऊँ तो शायद महीनों लग जाएँ लेकिन फिर भी मैं अपने तीन गुरुओं के बारे में तुम्हें जरूर बताऊँगा ।

मेरा पहला गुरु था एक कुत्ता । एक बार बहुत गर्मी वाले दिन मैं बहुत प्यासा था और पानी की तलाश में घूम रहा था । तभी वहाँ एक कुत्ता दौड़ता हुआ आया, वह भी प्यासा था । पास ही एक नदी थी । उस कुत्ते ने आगे जाकर नदी में झाँका तो उसे एक और कुत्ता पानी में नजर आया, जो उसकी अपनी ही परछाई थी । कुत्ता उसे देखकर बहुत डर गया । वह परछाई को देखकर भौंकता और पीछे हट जाता लेकिन प्यासा होने के कारण वह वापस नदी के पास लौट आता । अंततः अपने डर के बावजूद वह नदी में कूद पड़ा और उसके कूदते ही वह परछाई भी गायब हो गई । उस कुत्ते के इस साहस को देखकर मुझे एक बहुत बड़ी सीख मिली । अपने डर के बावजूद व्यक्ति को छलांग लगानी पड़ती है । सफलता उसे ही मिलती है जो व्यक्ति डर का सामना साहस से करता है ।

मेरा दूसरा गुरु एक चोर है । एक बार मैं रास्ता भटक गया था और जब दूर किसी गाँव में पहुँचा तो बहुत देर हो चुकी थी । सभी दुकानें और घर बंद हो चुके थे । आखिरकार मुझे एक आदमी मिला जो एक दीवार में सेंध लगाने की कोशिश कर रहा था । मैंने उससे पूछा कि मैं कहाँ ठहर सकता हूँ तो उसने कहा कि इस आधी रात के समय आपको कहीं आसरा मिलना मुश्किल होगा लेकिन आप चाहें तो मेरे साथ ठहर सकते हैं । मैं एक चोर हूँ और अगर एक चोर के साथ रहने में आपको कोई परेशानी नहीं हो तो आप मेरे साथ रह सकते हैं । वह इतना प्यारा आदमी था कि मैं उसके साथ एक महीने तक रह गया । वह हर रात मुझे कहता कि मैं अपने काम पर जाता हूँ, आप आराम करें, प्रार्थना करें । जब वह काम से आता तो मैं उससे पूछता कि कुछ मिला या नहीं तो वह कहता कि आज तो कुछ नहीं मिला पर अगर भगवान ने चाहा तो जल्द ही कुछ

जरूर मिलेगा । वह कभी निराश या उदास नहीं होता था, हमेशा मस्त रहता था । जब मुझे ध्यान करते हुए सालों बीत गए थे और कुछ भी नहीं हो रहा था तो कई बार ऐसे क्षण आते थे कि मैं बिल्कुल हताश और निराश होकर ध्यान छोड़ देने की ठान लेता था और तब अचानक मुझे उस चोर की याद आती थी, जो रोज कहता था कि भगवान ने चाहा तो जल्द ही कुछ जरूर मिलेगा ।

मेरा तीसरा गुरु एक छोटा बच्चा है । मैं एक गाँव से गुजर रहा था तो मैंने देखा कि एक छोटा बच्चा एक जलती हुई मोमबत्ती लेकर जा रहा था । मजाक में ही मैंने उससे पूछा कि क्या यह मोमबत्ती तुमने जलाई है? वह बोला- जी, मैंने ही जलाई है । तो मैंने उससे कहा कि एक क्षण था जब यह मोमबत्ती जल गई, क्या तुम मुझे वह स्रोत दिखा सकते हो जहाँ से वह ज्योति आई? वह बच्चा हँसा और मोमबत्ती को फूँक मारकर बुझाते हुए बोला, अब आपने ज्योति को जाते हुए देखा है । कहाँ गई वह, यह आप ही मुझे बताइए । यह सुनकर मेरा अहंकार चकनाचूर हो गया, मेरा घमंड जाता रहा और उस क्षण मुझे अपनी ही मूढ़ता का एहसास हुआ । तब से मैंने कोरे ज्ञान से हाथ धो लिया ।

हमें हर समय, हर ओर से सीखने को तैयार रहना चाहिए । जीवन का हर क्षण हमें कुछ ना कुछ सीखने का मौका देता है । हमें जीवन में हमेशा एक शिष्य बन कर अच्छी बातों को सीखते रहना चाहिए। यह जीवन हमें आए दिन किसी न किसी रूप में किसी गुरु से मिलाता रहता है । यह हम पर निर्भर करता है कि हम शिष्य बनकर उस गुरु से मिलने वाली शिक्षा ग्रहण कर पा रहे हैं या नहीं ।

मानवता

श्रीमती सुषमा चौबे
पति- श्री नवीन चौबे

अंधे की लाठी बन जाना
भटके जन को राह दिखाना
और अनार्थों को अपनाना
कष्ट सभी के दूर हटाना

कंकड़ चुनना, सुमन सजाना
अंधकार में ज्योति जलाना
भूखे जन की क्षुधा मिटाना
प्यासे को जलपान कराना

निर्बल का बल बन दिखलाना
निर्जन का निज जन बन जाना
अपने प्रण पर प्राण गँवाना
जो कुछ कहना, कर दिखलाना

कुपथ छोड़ सत पथ पर जाना
काम-क्रोध को दूर भगाना
द्वेष-बैर को दूर हटाना
परधन पर न कभी ललचाना

नहीं सफलता पर इतराना
नहीं विफलता में डिग जाना
नहीं किसी पर दोष लगाना
मानव बन मानवता दर्शाना ।

विविधता में एकता

सुश्री इप्सिता साहु

पिता - श्री महेश्वर साहु

बहादुरशाह थे मुसलमान, हिंदू थी झाँसी की रानी ।

मिलकर लड़े युद्ध अंग्रेजों के विरुद्ध, क्योंकि दिल से सब थे हिंदुस्तानी ॥

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष ने भारत की विविधता में एकता की भावना का परिचय दिया । विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, जातियों और समुदायों के लोग एक ही बात को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए कि वे सभी सर्वप्रथम भारतीय थे ।

भारत की विविधता एक ऐसी शक्ति है जो दुनिया में किसी और जगह नहीं मिलती । दक्षिण भारत से आए शंकराचार्य ने उत्तर में मंदिर की स्थापना की और रामेश्वरम में जन्मे एक मुसलमान, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम देश के सर्वोच्च पद पर पहुँचे ।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ किसी को हजारों किस्म के लोग मिल जाएँगे, जो अलग-अलग धर्म, जाति, संस्कृति, रंग के हैं । उनका खान-पान अलग होता है, पहनावा अलग होता है । इन सबके बावजूद हम एकजुट होकर स्वतंत्र हुए और अब भी हम एक हैं । इस कारण भारत एक मजबूत राष्ट्र है जहाँ हर तरह के लोग भाई-भाई की तरह प्यार से रहते हैं ।

जब भी हम भेद-भाव करने लगें, जब हम बँट जाएँ और हमारी एकता टूट जाए तब हमें मान लेना चाहिए कि इस देश को टूट कर कमजोर होने में कुछ ही समय है ।

यदि कुछ लोग मिलजुल कर, एकजुट होकर कोई काम करें तो वह आसान हो जाता है और निश्चय ही वह कार्य सफल हो जाता है । राष्ट्रीय एकता को बरकरार रखने के लिए हमें सदैव एकजुट होकर ही कार्य करना चाहिए ।

जिस प्रकार बूँद-बूँद से घड़ा भरता है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग से एकता की भावना का उदय होता है । एकता देश के लिए इतनी महत्वपूर्ण है कि इसके अभाव में न कोई देश उन्नति कर सकता है और न ही अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है ।

देश में एकता हो तो आधी समस्याएँ स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं, किंतु यदि एकता न हो तो अनंत समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं । इसलिए हमें सदैव एकजुट होकर रहना चाहिए क्योंकि हमें पता है कि अगर हम मिलकर रहें तो खड़े रह सकेंगे और अगर बँट गए तो गिर जाएँगे ।

बचपन की सीख - जो जीवन बदल दे

श्रीमती बबीता दास

पति- श्री दीपक कुमार दास

एक राजा था, जिसका नाम महेन्द्र प्रताप था। उनकी तीन रानियाँ थीं। उनके जीवन में सभी प्रकार के सुख-समृद्धि थे। राज्य का काम भी ऐशो-आराम से चल रहा था। राजा के अच्छे गुणों के कारण प्रजा प्रसन्न थी और जिस राज्य में प्रजा कुशल रहती है, वहाँ की आर्थिक व्यवस्था दुरुस्त होती है। इस प्रकार हर क्षेत्र में राज्य का प्रभाव अच्छा था। इतने सुखों के बाद भी राजा दुःखी था क्योंकि उसकी कोई संतान नहीं थी।

संतान प्राप्ति के लिए मंदिरों में प्रार्थना की, पूजा-पाठ किए तथा कई मन्त्रों के बाद उसे अपनी बड़ी रानी से एक पुत्र की प्राप्ति हुई। राजा बहुत खुश था। राजकुमार के आने से प्रजा भी खुश थी। राजा ने अपने पुत्र के कुशल जीवन की मंगल कामना करते हुए अपने राज्य की पूरी प्रजा की महल में खाने की व्यवस्था की तथा दान-पुण्य भी किया। सब अच्छा चल रहा था। वर्षों के बाद महल में नन्हें मेहमान के आने से सभी रानियाँ भी खुश थीं। राजा ने अपने पुत्र का नामकरण किया और राजकुमार का नाम नंदन प्रताप रखा गया।

नंदन की आयु ज्यों-ज्यों बढ़ी, त्यों-त्यों उसकी शरारतें भी बढ़ने लगीं। बचपन से ही वह ज़िद्दी स्वभाव का था। वह जिस वस्तु की माँग करता, उसकी माँग पूरी हो जाती थी। इस कारण भी वह बहुत ज्यादा ज़िद्दी हो गया। वह बड़ों का सम्मान भी नहीं करता था, जिसे देख कर राजा बहुत दुखी रहते थे।

एक दिन राजा ने एक सभा बुलवाई और अपने सभासदों से अपने दिल की बात की कि वे राजकुमार के इस व्यवहार से अत्यंत दुखी हैं। राजकुमार इस राज्य का भविष्य हैं और अगर उनका यही व्यवहार रहा तो राज्य की खुशहाली चंद दिनों में जाती रहेगी। दरबारियों ने राजा को सांत्वना दिया कि आप हिम्मत रखें वरना प्रजा निस्सहाय हो जाएगी। मंत्री ने सुझाव दिया कि राजकुमार को उचित मार्गदर्शन एवं सामान्य जीवन के अनुभव की जरूरत है। आप उन्हें गुरु रामानुजन जी के आश्रम भेज दीजिए। सुना है वहाँ जो भी इंसान जाता है, वह महान ज्ञानी हो के ही आता है। राजा को यह सुझाव अच्छा लगा और उन्होंने नंदन को गुरु जी के आश्रम भेज दिया।

अगले दिन राजा अपने पुत्र के साथ गुरु जी के आश्रम पहुँचे। राजा ने गुरु रामानुजन से अकेले बात की और नंदन के विषय में सारी बातें कहीं। गुरु जी ने राजा को आश्वस्त किया कि वे जब अपने पुत्र से मिलेंगे तब उन्हें गर्व महसूस होगा। गुरु जी के ऐसे शब्द सुनकर राजा को शांति महसूस हुई और वे सहर्ष अपने पुत्र को आश्रम में छोड़ कर राजमहल लौट गए।

अगले दिन सुबह गुरु के खास चेले द्वारा नंदन को भिक्षा मांग कर खाने को कहा गया, जिसे सुनकर नंदन ने साफ इंकार कर दिया। चेले ने उसे कह दिया कि अगर पेट भरना है तो भिक्षा माँगनी होगी और भिक्षा का समय शाम तक ही है, अन्यथा भूखे रहना पड़ेगा। नंदन ने अपनी अकड़ में चेले की बात नहीं मानी और शाम होते-होते उसे भूख लगने लगी लेकिन उसे खाना नहीं मिला। दूसरे दिन उसने भिक्षा माँगना शुरू किया। शुरुआत में उसके व्यवहार के कारण कोई उसे भिक्षा नहीं देता था लेकिन गुरुकुल में सभी के साथ बैठने पर उसे आधा पेट भोजन मिल जाता था। धीरे-धीरे उसे मीठे बोल का महत्व समझ आने लगा और करीब एक महीने बाद नंदन को भरपेट भोजन मिला जिसके बाद उसके व्यवहार में बहुत से परिवर्तन आए।

इसी तरह गुरुकुल के सभी नियमों ने राजकुमार में बहुत से परिवर्तन किए, जिसे रामानुजन जी भी समझ रहे थे। एक दिन गुरु जी ने नंदन को अपने साथ सैर पर ले गए और रास्ते भर बहुत सारी बातें की। गुरु जी ने नंदन से कहा कि तुम बहुत बुद्धिमान हो और तुममें बहुत अधिक ऊर्जा है, जिसका तुम्हें सही दिशा में उपयोग करना आना चाहिए। दोनों चलते-चलते एक सुंदर बाग में पहुँच गए, जहाँ बहुत सुंदर-सुंदर फूल थे, जिनसे बाग महक रहा था। गुरु जी ने नंदन को बाग से पूजा के लिए गुलाब के फूल तोड़ने को कहा। नंदन झट से सुंदर वाले फूल तोड़ लाया और गुरु के सामने रख दिया। अब गुरु जी ने उसे नीम के पत्ते तोड़कर लाने को कहा। नंदन वो भी ले आया। अब गुरु जी ने उसे एक गुलाब सूँघने दिया और कहा- बताओ कैसा लगता है। नंदन ने गुलाब सूँघा और गुलाब की बहुत तारीफ की। फिर गुरु जी ने नीम के पत्ते को चखकर उसके बारे में बताने को कहा। नंदन ने इसके स्वाद की बहुत निंदा की। गुरु जी के कुछ कहे बिना नंदन समझ गया कि यदि हम गुलाब के फूल की भाँति बनेंगे तो लोग तारीफ करेंगे और नीम के पत्ते की तरह रहने पर लोग हमारी निंदा करेंगे। गुरु जी की इस सीख ने नंदन के व्यवहार को ही बदल दिया। जब वह शिक्षा पूरी कर महल लौटा तो वह पूरी तरह से बदल चुका था। अपने बदले हुए स्वभाव से वह एक बहुत कुशल राजा बना।

कल्पना

श्री विक्रान्त आनंद

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

कल्पना एक ऐसा अनुभव है जिससे ज्यादातर खुशी का ही एहसास होता है । कल्पनाएँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं- एक जो खुशी प्रदान करती है, दूसरा जो कष्ट देती है । ज्यादातर कल्पनाएँ खुशी ही देती हैं, कष्ट केवल उस समय होता है जब तन और मन दोनों कष्ट में हो । उस समय केवल कष्ट वाली कल्पना ही मन में आती है क्योंकि नकारात्मकता ज्यादा होती है । खाली बैठे समय या खुशी के समय ऐसी कल्पना करते हैं, जिससे मन प्रसन्न हो जाता है। आविष्कार इसी का एक हिस्सा है। अगर आप कुछ नया करना चाहते हैं तो पहले आप उसकी कल्पना करते हैं और फिर उसे वास्तविकता में लाने की कोशिश करते हैं। अगर उस कल्पना को वास्तविकता में लाने में सफल होते हैं तो खुशी होती है और अगर असफल होते हैं तो पुनः आप अपने ज्ञान और अनुभव से कल्पना करते हैं कि इसे कैसे ठीक किया जाए और पुनः कोशिश करते हैं। एक लोकप्रिय कहावत है “आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है,” इससे सभी लोग परिचित हैं। कहने का भाव यह है कि आवश्यकता होने पर इसके समाधान पर विचार करते हैं और फिर कल्पना करते हैं कि क्या इससे समस्या का समाधान हो सकता है या नहीं । फिर कल्पना को वास्तविकता में लाने की कोशिश करते हैं और इससे समस्या का समाधान निकल के आता है । किसी भी वस्तु या मशीन का आविष्कार कल्पना से ही संभव है । छोटे बच्चे जो बालू में खेलते हैं और विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाते हैं, ये सब कल्पना की ही देन है और यही उनके मानसिक और शारीरिक विकास में मदद करता है । जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है कल्पना करते की क्षमता बढ़ती जाती है और आगे जाकर कोई वैज्ञानिक बनता है तो कोई डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि। हमलोग जो चलचित्र देखते हैं, वह कल्पना का एक उत्तम उदाहरण है । एक और उदाहरण ‘शक्तिमान’ धारावाहिक है। जब भी यह धारावाहिक शुरू होता था तो एक सन्देश आता था - ‘इस धारावाहिक के सभी पात्र काल्पनिक हैं, इससे किसी का कोई सम्बन्ध नहीं है, अगर किसी से कोई सम्बन्ध होता है तो इसे बस एक संयोग माना जायेगा ।’ कहने का मतलब है कि ये पूरी तरह काल्पनिक है परन्तु हम लोग इसे देखना बहुत पसंद करते हैं क्योंकि यह कल्पना अत्यंत रोचक है।

कल्पना करने की कोई सीमा नहीं है । इसलिए तो कहा गया है 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'। कवि की कल्पना अनन्त होती है और इसकी अनन्त सीमा के कारण ही वह सुन्दर कविता की रचना कर पाता है, जो सभी के मन को प्रसन्न करता है । हमलोग जिस गाने पर विवाह में, घर में या और भी जगह पर नाचते हैं या गुनगुनाते हैं, यह सब कल्पना की ही देन है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का एक कथन है "सपने सच होने से पहले आपको सपने देखने होंगे।"

सभी को हमेशा सकारात्मक और रचनात्मक कल्पना करनी चाहिए और उसको वास्तविकता में लाने की कोशिश करनी चाहिए, इसी से विकास और मन का शांति संभव है। सकारात्मक कल्पना से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होगा और जीवन सकारात्मक दिशा में जायेगी, जिससे जीवन में हमेशा खुशी रहेगी ।

पेड़ बचाओ

सुश्री कृतीका हाजरा
पिता- श्री वासुदेव हाजरा

मैं हूँ पेड़, मुझे मत काटो
टुकड़ों-टुकड़ों में मुझे न बाँटो
दर्द मुझे भी होता है
मन मेरा भी रोता है।
मैं हूँ मित्र तुम्हारा
सखा हूँ सबसे न्यारा
मेरे फल खुद नहीं खाता हूँ
सब तुम्हें ही तो दे जाता हूँ ।

जहरीली गैस भी पी जाता हूँ
शुद्ध हवा तुम तक पहुँचाता हूँ
सूरज का भी ताप सहूँ
मैं हूँ जीवन का आधार
फिर भी तुम मुझ पर करते प्रहार
सुनो बात तुम कान लगाकर
वृक्ष का करना सम्मान
मैं हूँ जीवन का आधार ।

भारतीय रेल

श्रीमती सुष्मिता कुमारी

पति - श्री हरि मोहन कुमार

‘भारतीय रेल’ शब्द से ही हमारे मन में एक छवि चित्रित होती है जो हमें कई स्मरणों, अनुभूतियों एवं भावनाओं से भावविभोर कर देती है। इसका इतिहास जहाँ एक ओर हमें भारत की विकास यात्रा से जोड़ता है, वहीं दूसरी ओर इसकी सुगम यात्रा हमें अचम्भित करती है। मानवता ने विकास यात्रा जहाँ पहिये के निर्माण से प्रारम्भ की, वहीं धीरे-धीरे विकास करके रेल वाहन के निर्माण तक का सफ़र तय किया। यात्रा के लिए जहाँ हम बैल-गाड़ी, घोड़ा-गाड़ी, मोटरगाड़ी तक ही सीमित थे, वहीं रेल गाड़ी ने मीलों की दूरी को बड़ा सुगम और आसन बना दिया। भारतीय रेल की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि इसकी यात्रा का खर्च आम जनसंख्या के सामर्थ्य में है। तकनीकी विज्ञान एवं अभियांत्रिक विकास से हम रेल का आधुनिकीकरण भी करते जा रहे हैं।

आज यह जो हम भारतीय रेल के फैलाव को देख रहे हैं, वो हमारे अडिग विश्वास का एक उदाहरण है, इसके पीछे लाखों लोगों के निरंतर कार्यरत रहने का श्रम है। यदि हम इसकी सरकारी संरचना को देखें तो यह एक विशालकाय कार्यप्रणाली है। भारतीय रेल को सुगम एवं सुचारु रूप से चलाने के लिए इसके प्रबंधन को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जैसे- उत्तर रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे, पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे, मध्य रेलवे, दक्षिण रेलवे, पूर्व तट रेलवे, पूर्व मध्य रेलवे, आदि। ऐसे ही कुल 17 रेलवे जोन में भारतीय रेल अभी तक बंटा हुआ है और आगे एक नया जोन बनाने की भी घोषणाकर दी गई है जिसका नाम दक्षिण तट रेलवे होगा।

भारतीय रेल के हर एक जोन का प्रबंधन एक ‘महाप्रबंधक’ करता है। एक जोन के कई मंडल कार्यालय होते हैं और उसका प्रबंधन ‘मंडल रेल प्रबंधक’ करते हैं। रेलवे के कई विभाग हैं, जैसे- मैकेनिकल, ऑपरेटिंग, इंजीनियरिंग, वाणिज्य, लेखा, दूरसंचार, इलेक्ट्रिकल इत्यादि। सभी विभाग जब पारस्परिक एकता एवं सामंजस्य से सुचारु ढंग से काम करते हैं तब जाकर रेल अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। सभी विभागों की अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ होती हैं। रेल के दैनिक आवागमन एवं उसके परिचालन के अलावा, रेल के विस्तार के लिए भी एक इकाई है, जिसे निर्माण इकाई कहा जाता है। निर्माण इकाई रेलवे की नई परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए समर्पित होती है।

भारतीय रेल हमारे देश के कई स्थानों को जोड़ती है जिसमें कई बड़े-बड़े शहर हैं परन्तु इसकी विशेषता और महत्ता तब बढ़ जाती है जब ये हमारे कई छोटे-छोटे शहरों, कस्बों को भी एक-दूसरे से जोड़ती है। यह हमारे गाँवों, छोटे शहरों, कस्बों के विकास एवं तरक्की को आधार प्रदान करती है। यह ग्रामीण जनसंख्या एवं दुर्गम क्षेत्र के लोगों को शहरों, बाजारों से जोड़ती है, जो उनके उत्थान के लिए वरदान से कम नहीं है। रेल का संयोजन हमारे लिए कई मायनों में लाभकारी है। अगर चिकित्सा की बात की जाए तो आज हम चाहे छोटे-बड़े किसी भी शहर में हों, देश के शीर्ष अस्पतालों में जैसे कि वेल्लोर का सी.एम.सी., बंगलुरु का कैंसर संस्थान, किसी भी जगह जाकर अपनी चिकित्सा करा सकते हैं। वहीं दूसरी ओर शिक्षा की बात की जाए तो इसमें भी भारतीय रेल के योगदान को हम भूल नहीं सकते हैं। आज हमें जब कहीं दूसरे राज्य या फिर अपने शहर से दूर किसी स्कूल, कॉलेज या संस्थान में पढ़ने का अवसर मिलता है तो हम बेझिझक उसमें प्रवेश की कोशिशों में जुट जाते हैं और फिर वहां से अपना पठन-पाठन करते हैं। हमारे मन में यह प्रश्न भी कम ही आता है की उस स्थान पर जाएँगे कैसे क्योंकि हमारा अचेतन निश्चित है कि रेल तो कम से कम वहाँ पहुँचा ही देगी। यदि ठीक उसी स्थान पर ना भी पहुँचा पाए तो कम से कम उसके निकटतम स्थान पर तो अवश्य ही पहुँचा देगी। आज हम निसंकोच अपनी उच्च शिक्षा जैसे कि इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट, रिसर्च, पी.एच.डी. इत्यादी के लिए तैयारी करते हैं और देश के किसी भी विश्वविद्यालय में भर्ती हेतु प्रयासरत रहते हैं। एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार के ये सब सपने अगर सच हुए हैं तो इसमें भारतीय रेल की एक बड़ी भूमिका है। रोजगार के लिए भी लोगों का यहाँ-वहाँ आना-जाना आए दिन लगा ही रहता है और इसमें भी भारतीय रेल की अहम भूमिका रहती है। यह सब तो रेल के आवागमन से लोगों के विकास में योगदान की बात हो गई परन्तु देश की अर्थव्यवस्था में रेल के योगदान की बात की जाए तो वह भी अतुल्य है।

अगर हम पर्यटन व्यवसाय को देखें तो रेल इसके बुनियादी ढांचे में से एक है, इसके बिना हम अपने देश में पर्यटन की कल्पना नहीं कर सकते। अपने देश में भ्रमण करने के लिए सैलानियों में अच्छा उत्साह है। यही नहीं, यहाँ तो विदेशी सैलानियों का भी बड़े समूह में आना-जाना लगा रहता है। सरकार भी इस बात से भली-भाँती अवगत है कि पर्यटन को यदि बढ़ावा देना है तो इसके लिए रेल की पहुँच को फैलाना होगा एवं उसे और अधिक सुगम बनाना होगा। इसलिए हम देखते हैं कि रेल परियोजनाओं में रेल संयोजकता का स्थान शीर्ष रहता है। इसे प्राथमिकता देते हुए देश के प्रमुख एवं प्रसिद्ध स्थानों को जोड़ा जा रहा है और जो स्थान पहले से जुड़े थे उन्हें और सुगम

बनाया जा रहा है। अब नई-नई तकनीकों का सहारा लिया जा रहा है जिससे हम दुर्गम पहाड़ियों वाले क्षेत्र को भी रेल से जोड़ सकें और उन क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा दे सकें। भारतीय रेलवे स्वयं भी पर्यटन को बढ़ावा देने में बढ़-चढ़ के भाग लेती है और यह भिन्न प्रकार के यात्रा पैकेज अपने सैलानियों को पूर्व निर्धारित करके प्रदान करती है, जैसे कि उत्तर पूर्व भारत भ्रमण पैकेज, चारधाम पैकेज, लद्दाख पैकेज, इत्यादि।

भारतीय रेल सिर्फ यात्री सेवा ही नहीं करती है बल्कि यह देश की एक मजबूत आपूर्ति श्रृंखला का भी भाग है। उद्योगों में कच्चा माल पहुँचाना हो या फिर वहां से तैयार माल को देश के अलग-अलग बाजारों तक पहुँचाना हो, यह सब भारतीय रेल के बंदौलत ही सुगम, सस्ते और सुरक्षित तरीके से हो पाता है। खदानों से कोयला, विभिन्न अयस्क, चूना-पत्थर इत्यादि आज हम रेल की मदद से ही कारखानों तक या फिर विदेश में भेजने के लिए बंदरगाहों तक बड़ी आसानी से पहुँचा पा रहे हैं। देश की खाद्यान्न आपूर्ति श्रृंखला जैसे कि चावल, गेहूँ आदि या फिर कच्चे तेल की आपूर्ति, इस सबमें भारतीय रेल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इसका उदाहरण हमने अभी-अभी कोरोना महामारी के दौरान देखा है, जब लोगों के जीने के मूलभूत संसाधनों एवं जरूरतों पर आफत आ गई। भारतीय रेल ने इसमें अपनी कुशलता का प्रमाण दिया और यही नहीं, भारतीय रेल के कर्मचारियों और अधिकारियों ने भी इसमें अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। यह भारतीय रेल ही था जो विपरीत परिस्थितियों में देश के लिए वरदान साबित हुआ और लोगों तक खाद्यान्न, औषधि और अन्य अति महत्वपूर्ण सामानों की आपूर्ति एक स्थान से दूसरे स्थान तक करता रहा जिससे देश में एक स्थिर वातावरण बना रहा।

जब देश में रोजगार की बात होती है तब भारतीय रेल एक विशाल समूह को अपने आप में समेटे हुए प्रतीत होता है। भारतीय रेल में लगभग तेरह लाख लोग कार्यरत हैं, जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। वैश्विक स्तर पर बात की जाए तो रोजगार देने के मामले में यह आठवें स्थान पर है। इसमें महिलाओं के रोजगार की बात की जाए तो करीब एक लाख से ऊपर महिलाएँ रेलवे में कार्यरत हैं और यह आंकड़ा दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। यह महिलाओं की कुशल कार्यक्षमता को दर्शाता है। इस मामले में भारतीय रेल विश्व में शीर्ष स्थान पर है। यह तो प्रत्यक्ष रूप से रोजगार देने की बात है परन्तु इसके अलावा रेल से अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। साथ ही, इसके विस्तार से जब नई-नई जगहों का विकास होता है तो वहाँ

स्वयं ही नए रोजगारों का सृजन होता है। इस तरह भारतीय रेल हमेशा रोजगार के नए अवसर प्रदान करती है।

भारतीय रेल हमारे देश की एक अमूल्य धरोहर है। यह देश के बुनियादी ढांचों में से एक है जो आर्थिक चक्र को गति देने में समर्थ है। इसपर देश के कई व्यवसाय और इकाइयाँ आश्रित हैं। देश के कई प्रमुख उद्योग जैसे कि कोयला, कच्चा तेल, रिफाइनरी उत्पाद, ऊर्वरक, सीमेंट इत्यादि भारतीय रेल की सहायता से सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अहम योगदान देता है। देश को सशक्त बनाने में इसकी अहम भूमिका है। यह देश की 'विविधता में एकता' की भावना को मजबूती प्रदान करती है और हमें इस पर बहुत गर्व है।

दोस्ती

सुश्री श्रद्धा राउत
पिता- श्री पूर्ण चंद्र राउत

दोस्ती कर चुके हैं, दुश्मनी न करेंगे हम
साथ-साथ चलेंगे, अलग कभी न होंगे हम
वादा कर चुके हैं अब न इसे तोड़ेंगे हम
कभी लड़ भी गए तो उसको सुलझाएँगे हम
वादा दो तुम मुझको, साथ-साथ रहेंगे हम
उन बचपन की किलकारियों को कभी न भूलेंगे हम
इस प्यारे एहसान को सजा के रखेंगे हम
होठों पे जो ला दे मुस्कुराहट ऐसे दोस्त हैं हम
प्रेम और त्याग के धागे से जुड़ा एक विश्वास हैं हम
दुनिया के सभी रिश्तों में सबसे खास हैं हम
दोस्त हैं हम, दोस्त हैं हम।

मुर्गा और घमंड

आदर्श साहु

पिता- श्री पद्म चरण साहु

एक समय की बात है एक गाँव में बहुत सारे मुर्गे रहते थे । गाँव के बच्चे ने किसी एक मुर्गे को तंग कर दिया था। मुर्गा बहुत परेशान हो गया, उसने सोचा अगले दिन सुबह मैं आवाज नहीं करूँगा । सब सोते रहेंगे, तब सबको मेरी अहमियत समझ में आएगी और मुझे तंग नहीं करेंगे । मुर्गा अगली सुबह कुछ नहीं बोला । सभी लोग समय पर उठकर अपने-अपने कामकाज में लग गए । इसपर मुर्गे को समझ में आ गया कि किसी के बिना कोई काम नहीं रुकता, सबका काम चलता रहता है ।

नैतिक शिक्षा- कभी भी किसी को घमंड नहीं करना चाहिए । आपकी अहमियत लोगों को बिना बताए पता चलती है ।

राजगृह

श्रीमती अनिशा कुमारी

पति- श्री राजु कुमार

पटना से करीब 100 किलोमीटर दूर पंच पहाड़ियों से घिरा 'राजगीर वन्यजीव अभ्यारण्य' प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण और साथ ही अपने अंदर जैव-विविधता को समेटे हुए बिहार के नालंदा जिले में स्थित है। बिहार में 12 वन्यजीव अभ्यारण्य और एक राष्ट्रीय उद्यान है। राजगीर अभ्यारण्य में वनस्पतियों और वन्यप्राणियों की कई दुर्लभ प्रजातियां देखने को मिलती हैं। औषधीय पौधों की कई किस्में राजगीर के जंगलों में पाई जाती हैं। वन्यजीवों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा सन् 1978 में 35.84 वर्ग किलोमीटर के राजगीर अरण्य क्षेत्र को वन्यजीव अभ्यारण्य बना दिया गया। हालाँकि कुछ वर्ष पहले तक इसे 'पंत वन्यजीव आश्रयणी' के नाम से भी जाना जाता था। पर्यटक यहाँ बिना किसी झंझट के पहुँच सकते हैं और राजगीर का वन विश्रामागार बस ठहराव से ज्यादा दूर भी नहीं है। राजगीर की ऐतिहासिक भूमि, धार्मिक तीर्थस्थल, तीन साल पर एक बार आनेवाला बृहद मलमास मेला और खूबसूरत वादियां पर्यटकों को खूब लुभाती हैं। यही वजह है कि राजगीर की पहचान आज अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में है।

पंच पहाड़ियां, रत्नागिरी, विपुलाचल, वैभारगिरि, सोनगिरि-उदयगिरि पतझड़ के समय तो बेजान लगते हैं लेकिन मॉनसून का आगाज होते ही मानो ये पुर्नजीवित हो जाते हैं। इससे वन्यप्राणियों की चहलकदमी भी बढ़ जाती है, जो पतझड़ वन की खासियत है। जीवनशैली में व्यस्तताओं से दूर प्रकृति प्रेमी यहाँ आते हैं और प्राकृतिक छटाओं का आनंद लेते हैं। राजगीर का घोड़ा कटोरा झील तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरा है और झील से सूर्यास्त का दृश्य मन को मोह लेता है। पर्यटक यहाँ झील में नौकायन का लुत्फ उठा सकते हैं और यहाँ साफ़-सफाई का भी बेहद ख्याल रखा जाता है। हाल ही में इसी झील के बीच भगवान बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा भी स्थापित की गई है। अगर आप प्राकृतिक सौंदर्य के साथ रोमांच और वन्यजीव को खुले जंगलों में विचरण करते देखने का अनुभव लेना चाहते हैं तो राजगीर अभ्यारण्य की सैर जरूर करें और इसके लिए वसंत से बेहतर कोई ऋतु नहीं हो सकती है क्योंकि इसके आगमन के साथ ही जंगलों में जैसे बहार आ जाती है। कलियां खेलने लगती हैं और मंजर लगे फलों के पेड़, फलों से लदे बेर के पेड़, खेतों में लहलहाती सरसों के पीले-पीले फूल और बागों में गाती कोयल और पपीहे अद्भुत एहसास कराते हैं। अभी हाल ही में यहाँ शीशे का पुल बनाया गया है, जहाँ से प्राकृतिक सौंदर्य को देखना मन को मोहित कर देता है।

वन्यजीव : राजगीर अभ्यारण्य में लंबी पूँछ वाली सुल्तान बुलबुल, रंगीन तीतर, कर्वानक, हारिल, बसंता, मछलीखोर पनकौवा, कोरिल्ला किलकिला, छोटा किलकिला और खंजन, कोतवाल, निशाचर उल्लू तथा नाईटज़ार (छपका), शिकरा बाज, अपनी मधुर आवाज के लिए मशहूर कोयल, पपीहा, आकर्षक सलेटी धनेश, जिसके चोंच पर सिंग होता है, सीटी जैसी आवाज निकालने वाली छोटी सिल्ही बतख, जंगल की प्रहरी टिटहरी, ऑरेंज हेडेड थ्रश आदि सामान्य पक्षी देखने को मिलते हैं। वही स्तनधारियों में चीतल, लंगूर, मकैक बंदर, नीलगाय, जंगली सुअर, सिवेट कैट, गीदड़, धारीदार लकड़बग्घा, जंगली खरहा, जंगली बिल्ली, साहिल और पहाड़ों के खोहों में चमगादड़ों की कुछ प्रजातियाँ पाई जाती हैं। शिकार के चलते खत्म होते भारतीय बज़किट, जिसे कभी राजगीर के जंगलों में देखना कोई बड़ी बात नहीं थी, आज बिहार के जंगलों से खत्म होने के कगार पर पहुँच गए हैं।

बिहार में करीब 14 से 15 प्रजाति के उभयचर पाए गए हैं जबकि अकेले राजगीर अभ्यारण्य में ही 12 प्रजातियाँ देखी जा चुकी हैं। 'बुलफ्रॉग' भारत की सबसे बड़ी प्रजाति का मेंढक है। दिन में अपने खास खुरपीनुमा पैर से खुदाई कर मिट्टी के अंदर छुपा रहने वाला 'रोलांड बुरोइंग फ्रॉग' और जंगलों के फर्श पर उंगली के नाखून आकार के छोटे मेंढक 'ऑर्नाट फ्रॉग' और रेंगनेवाले प्राणियों में बहुत कम संख्या में बचे 'इंडियन रॉक पाइथन' (अजगर) के अलावे ब्रॉजबैक ट्री स्नेक, ग्रीन वाइन स्नेक, कोबरा, करैत, वुल्फ स्नेक, मॉनिटर लिजार्ड, स्किंक भी खूब दिखते हैं। स्ट्रिपड टाईगर, पीकॉक पैन्सी, ग्रे पैन्सी, येलो पैन्सी, लेमन पैन्सी, कॉमन क्रो, मॉरमॉन, लाइम ब्लू, ग्राम ब्लू सहित करीब 40 प्रजाति की तितलियाँ राजगीर में मिलती हैं।

गर्म जल के झरने : वैभव पर्वत की सीढ़ियों पर मंदिरों के बीच गर्म जल के कई झरने (सप्तधाराएं) हैं, जहां सप्तकर्णी गुफाओं से जल आता है। इन झरनों के पानी में कई चिकित्सकीय गुण होने के प्रमाण मिले हैं। पुरुषों और महिलाओं के नहाने के लिए 22 कुण्ड बनाए गए हैं। इनमें "ब्रह्मकुण्ड" का पानी सबसे गर्म (45 डिग्री से.) होता है।

राजगीर का मलमास मेला : राजगीर की पहचान मेलों के नगर के रूप में भी है। इनमें सबसे प्रसिद्ध मकर और मलमास मेला हैं। शास्त्रों में मलमास तेरहवें मास के रूप में वर्णित है। सनातन मत की ज्योतिषीय गणना के अनुसार तीन वर्ष में एक वर्ष 366 दिन का होता है। धार्मिक मान्यता है कि इस अतिरिक्त एक महीने को मलमास या अतिरिक्त मास कहा जाता है।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार यह मास अपवित्र माना गया है और अग्नि पुराण के अनुसार इस अवधि में मूर्ति पूजा-प्रतिष्ठा, यज्ञदान, व्रत, वेदपाठ, उपनयन, नामकरण आदि वर्जित है। लेकिन इस अवधि में राजगीर सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। अग्नि पुराण एवं वायु पुराण आदि के अनुसार इस मलमास अवधि में सभी देवी-देवता यहां आकर वास करते हैं। राजगीर के मुख्य

ब्रह्मकुंड के बारे में पौराणिक मान्यता है कि इसे ब्रह्माजी ने प्रकट किया था और मलमास में इस कुंड में स्नान का विशेष फल है।

अभी कुछ समय से यहाँ यात्रियों के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है और वर्तमान का राजगीर पर्यटकों के लिए विशेष रूप से आकर्षक है।

आपके पत्र

<p>प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं वित्त सहायक लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बंगलूर-560001 OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.</p> <p>सं.हि.प्र.सं.-2021-22/ 1/५० दिनांक-13.10.2021</p> <p>सेवा में,</p> <p>वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा, कार्यालय - प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन, भुवनेश्वर, ओडिशा - 751017</p> <p>विषय:- प्रशंसा पत्र।</p> <p>महोदय,</p> <p>आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका 'धर्मपद' के दसवें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित श्रीमती शुष्मा का लेख 'प्रकृति का प्रकोप', श्रीमती शुष्मिता कुमारी का लेख 'विस्थापन - झारखंड की एक बड़ी समस्या' आदि पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यालयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।</p> <p>धन्यवाद,</p> <p>भवदीय 20/10/2021 वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)</p>	<p>कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ राजीव भवन, ऑडिट भवन, टी.सी.-35-V/2, विपुल खण्ड गोमती नगर, लखनऊ-226010</p> <p>पत्रांक: म.नि.ले.प. (के.)/प्रशासन/राजभाषा हिंदी/229 दिनांक: 20.10.2021</p> <p>सेवा में,</p> <p>वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / राजभाषा कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन भुवनेश्वर, ओडिशा - 751017</p> <p>विषय- हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के १०वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति के संबंध में।</p> <p>महोदय,</p> <p>आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'आभा' के अंक 87-90 वर्ष 2020-21, पत्रांक रा.भा.अ./धर्मपद पत्रिका/2021/106 दिनांक 04.10.2021 द्वारा प्राप्त हुआ।</p> <p>पत्रिका का यह अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा एवं सुगम स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ अत्यंत रुचिकर एवं जानकारीपूर्ण हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।</p> <p>भवदीय, 20/10/2021 वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन</p>
<p>  कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II पश्चिम बंगाल Office of the Pr. Accountant General, Audit - II West Bengal</p> <p>संख्या:- हिन्दी कक्षा/पत्रिका पावती/ 23 दिनांक-20/10/2021</p> <p>20 OCT 2021</p> <p>सेवा में,</p> <p>वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा भारतीय लेखापरीक्षा और सेवा विभाग, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन भुवनेश्वर-751017</p> <p>विषय: कार्यालयीन ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक के प्रेषण के संबंध में।</p> <p>महोदय/महोदया,</p> <p>आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कार्यालयीन ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं। पत्रिका का अवलोकन, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कवितारस एवं लेख भी आसुप्त, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनसे तो रचनाएँ अति उत्तम लगती हैं। गूढ़ कल्प, मेरी माँ, जिंदगी, दो दोस्त, एक भारत श्रेष्ठ भारत, कार्य का महत्व एवं टोकरी ओलीपक में भारत आदि।</p> <p>अप्ता करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उच्चतम अविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।</p> <p>भवदीय, 20/10/2021 वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्षा</p> <p>जी.जी.ओ.कम्प्लेक्स, टी.एफ.क्लीक, साइलेंट, कोलकाता-700 064 3rd MSO Building, 3rd Floor, CGO Complex, TF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064. Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agawestbengal2@cag.gov.in</p>	<p> भारत सरकार/Government of India</p> <p>कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), ओडिशा, भुवनेश्वर-751001 O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar-751001</p> <p>सं.हि.प्र.सं./2021/74 दिनांक: 03.11.2021</p> <p>सेवा में,</p> <p>वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन, भुवनेश्वर-751017</p> <p>विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।</p> <p>महोदय/महोदया,</p> <p>आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उच्च कौटुकी एवं प्रशंसनीय हैं।</p> <p>पत्रिका के उच्चतम अविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं ढेर शुभकामनाएँ।</p> <p>भवदीय 20/10/2021 हिंदी अधिकारी/प्रशासनी</p>



प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कक्षा/लेखा/पत्रिका-जवाब/(2021-22)/122
दिनांक 13/10/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, ओडिशा,
भुवनेश्वर-751017.

विषय :- वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 05/10/2021 के द्वारा हिन्दी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सज्जित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी की प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी की मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)
राजेश लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्षा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विधि/25/2018-2019/197
दिनांक: 28.10.2021

सेवा में,

2401

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन
समंत विहार, चंद्रशेखरपुर
भुवनेश्वर - 751017 (ओडिशा)

विषय: वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के दसवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के दसवें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यन्त आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुन्दर है। कवितारं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री विजय महापात्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षा द्वारा रचित लेख 'सफर', श्री विभास चन्द्र, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा लेख 'नजर', सुश्री प्रेरणा किशोर द्वारा लिखित लेख 'अहसास किसी को नहीं', श्री हरि मोहन कुमार, लेखापरीक्षा द्वारा लिखित लेख 'एक भारत श्रेष्ठ भारत', श्रीमती सुचित्रा कर्मकार द्वारा लिखित 'मेड इन इंडिया' सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय

(हस्ताक्षर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

'महालेखाकार भवन', कोलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष/Phone: 0135-2970870 फैक्स/Fax: 0135-2970871, ई-मेल/E-mail: agauuttarakhand@cag.gov.in



कार्यालय महालेखाकार (ले. व. ह.) मेघालय, शिलांग
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
MEGHALAYA, SHILONG - 793 001

फैक्स संख्या/Fax No. 0364-2223103 ई-मेल/E-mail: agnemeghalaya@cag.gov.in

सं-हिन्दी प्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/261

दिनांक: 10/01/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ राजभाषा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
संमत विहार, चंद्रशेखरपुर
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017, उडिशा

विषय: "धर्मपद" पत्रिका की प्राप्ति से संबंधित।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी वार्षिक गृह पत्रिका "धर्मपद" के 10वें अंक की सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत सुंदर एवं भारत की पौराणिक गाथाओं से संबंधित है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। श्री सीरम दास द्वारा रचित 'प्रकृति का प्रकोप' वास्तवमूखी है, श्रीमती अनिता कुमारी द्वारा रचित 'दान का महत्व' लेख प्रशंसनीय है। आपके कार्यालय पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी शुभकामना सहित आपकी पत्रिका 'धर्मपद' के उज्ज्वल भविष्य हेतु 'नवीन पूर्वांचल संदेश' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(हस्ताक्षर)
भवदीय

भवदीय

(हस्ताक्षर)
हिन्दी अधिकारी



स्वीड शिल्प

भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
लेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Accountant General (A & E), West Bengal

संख्या / No. :

दिनांक / Date : 15 DEC 2021

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन, समंत विहार,
चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर-751017, ओडिशा

विषय: वार्षिक ई-पत्रिका "धर्मपद" के 10वें अंक की पावती एवं अभिनंदन।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "धर्मपद" के 10वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। जैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से श्री चन्दन कुमार की "धुंधली लकीरें" तथा श्री हरि मोहन कुमार की "एक भारत श्रेष्ठ भारत" बेहद प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। कविताओं में श्री सिंगरई मुर्मू की "एक मुस्कान फिर फिरता है" एवं श्रीमती भवानी मुर्मू की "नारी" काफी अर्थपूर्ण एवं रोचक हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)
हिन्दी अधिकारी/प्रशा. हिन्दी सेल

देज़री बिल्डिंग, २, गवर्नमेंट प्लेस, वेस्ट, कोलकाता-700 001
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone : (033) 2213 8000, Fax : (033) 2248-7849
e-mail : agawestbengal@cag.gov.in Web Site : http://agwb.cag.gov.in



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/142

दिनांक: 15.12.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
महाभित्तक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
भुवनेश्वर-751017 (ओडिशा)

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के दसवें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" का दसवां अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पंजीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। श्री विक्रम महापात्र, कुल "सफर" रोचक, श्रीमती अनिता गुप्ता की कृत "दान का महत्त्व" शिक्षाप्रद, सुभी श्रद्धा पाल की कृत "गुब्बारे के रांग" मनोरंजक हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन, 361, जग्गा साने, तेनपेट, चेन्नै - 600 015. "LEKHA PARKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 015.
Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91-044 - 24339924, E-mail : dagaschennai@cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कायंलय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नर प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700 001



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-1),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal@cag.gov.in

संख्या: हिन्दी कक्षा/हिन्दी पत्रिका/पावती/145

दिनांक: 06.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751 017

विषय: वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 10वें अंक की पावती।

महोदय,

प्र. क्रमांक: रा.भा.अ./धर्मपद पत्रिका/2021/106, दिनांक: 04.10.2021 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 10वें अंक की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं जानवर्धक हैं। आपका कार्यालय के "ग" क्षेत्र में होते हुए भी हिन्दी के प्रति सहभागिता अत्यंत ही सराहनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्षा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश,
20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

प.सं.हि.अ./पत्रिका/57024

दिनांक: 20.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, ओडिशा
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर- 751017

विषय: वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "धर्मपद" के दशम अंक की पावती एवं अभिमत।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित राजभाषा पत्रिका "धर्मपद" के दशम अंक की ई-कॉपी प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। संकलित लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री विक्रम महापात्र (सफर), श्री विभास चन्द (नज़र), श्रीमती रोमा कुमारी (गुड न्यूज़), श्री निरुपम कर्मकार (पूरी में रचयाबा) एवं श्रीमती नीतू चंदा (टोक्यो ओलंपिक में भारत) आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उत्प्रेरक हैं।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाइयाँ। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी



भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़-160036
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT)
PUNJAB
CHANDIGARH -160036

क्रमांक: हि.अ./हिंदी पत्रिका/संख्या/2021-22/320,
दिनांक: 12.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट रेलवे, रेलवे सदन, भुवनेश्वर-751017 ओडिशा

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 9वें अंक का प्रेषण।
संदर्भ: रा.भा.अ./धर्मपद पत्रिका/2021/106, दिनांक: 04.10.2021
महोदय/महोदया

संदर्भित पत्र एवं आपकी कार्यालयी पत्रिका "धर्मपद" का नवीन ई-संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं समान रूप से उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ देखने मात्र से ओडिशा राज्य की प्रवीन एवं उत्तम भवन निर्माण कला के दर्शन होते हैं, जो की विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका में संकलित श्री विक्रम महापात्र जी का संस्करण "सफर", श्री हरिमोहन कुमार जी का लेख, "एक भारत श्रेष्ठ भारत" और श्री नवीन कुमार चौबे जी की कविता, "मैं नहीं तो और कौन" विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मंडल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "धर्मपद" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "सुगंधा" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी



महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (Audit-I),
ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2020-21/202.

दिनांक-26.10.2021

सेवा में,

निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व लट रेलवे, रेल सदन,
भुवनेश्वर - 751017

विषय:- हिन्दी पत्रिका धर्मपद के 10वें अंक के पावती के संबंध में ।.

आपके पत्र सं रा.भा.अ./धर्मपद पत्रिका/2021/106 दिनांक- 04.10.2021 के साथ कार्यालय की पत्रिका धर्मपद के 10वें अंक की प्राप्ति हुई । एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है । रंगों का चुनाव अच्छा है । कर्मचारियों एवं उनके बच्चों द्वारा दर्शाई गई चित्रकारी अत्यंत सराहनीय हैं । पत्रिका में रचनाओं का संकलन उत्कृष्ट कोटि का है । समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं । पत्रिका की रचनाएं पठनीय एवं संवहनीय हैं । कार्यालयी गतिविधियों के पत्र पत्रिका की शोभा को बढ़ाते हैं । ग. क्षेत्र में होने के बावजूद भी कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों की ई-पत्रिका में भागीदारी प्रशंसनीय एवं सराहनीय है ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी



भवालेखाकार (ले. व. प्र.) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, रीक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail - agaharyana@cah.gov.in

हिंदी/कक्षा/पत्रि.प्रति./2021-22/161

दिनांक: 21.10.2021

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व लट रेलवे,
रेल सदन, भुवनेश्वर ।

महोदय,

विषय : वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक के सम्बन्ध में

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 05.10.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 10वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, जानवर्यक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री ब्रजम महापात्र का लेख 'सफर', श्री सूरज कुमार का लेख 'महंगाई', श्रीमती अनिता कुमारी का लेख 'दान का महत्व, श्रीमती स्वागति साहू का लेख 'कर्म का महत्व' एवं श्रीमती सुचिता कर्मकर का लेख 'मेड इन इंडिया' बहुत ही जानवर्यक लेख हैं ।

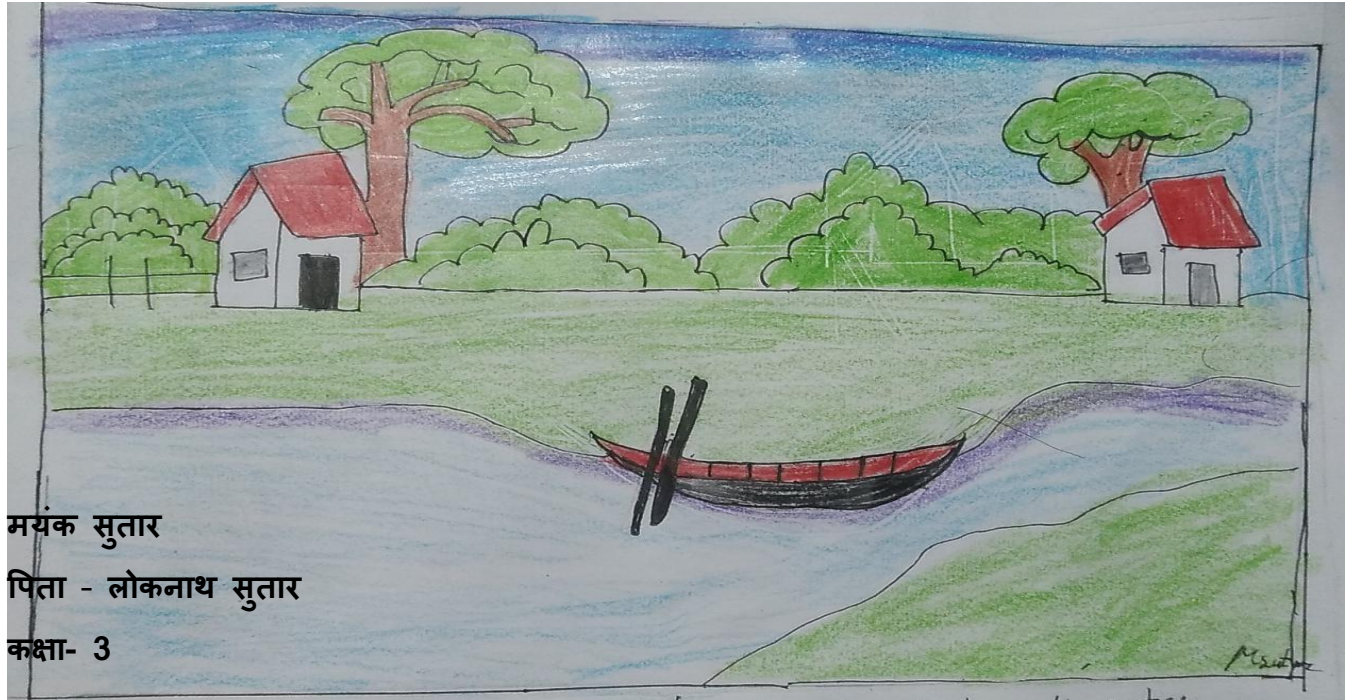
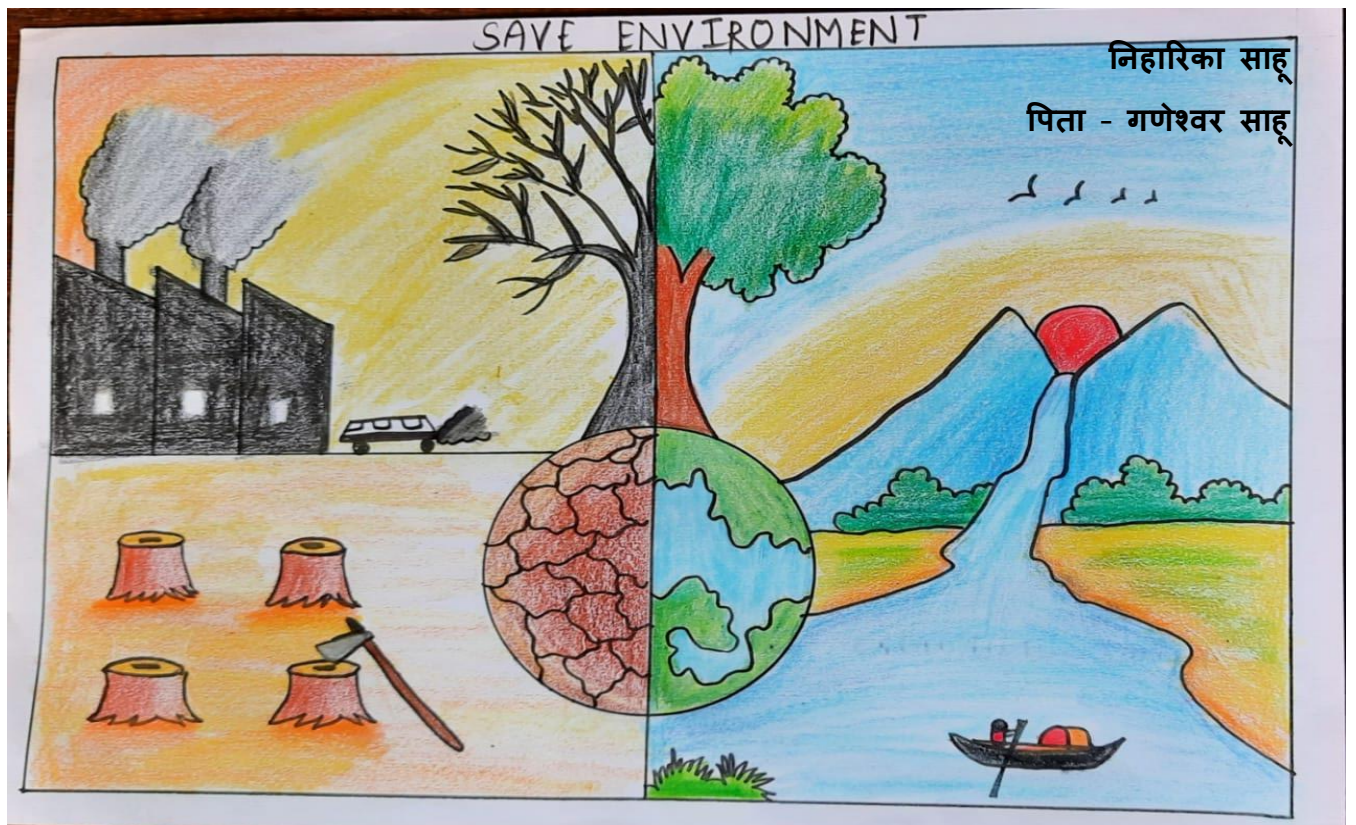
इसके अतिरिक्त श्रीमती बबिता दास की कविता 'जिंदगी का पड़ाव', श्रीमती सिंगराई मुर्मू की कविता 'एक मुस्कान लिए फिटा हूँ', श्रीमती भवानी मुर्मू की कविता 'नारी' एवं श्री निरंजन परिडा की कविता 'काला बादल' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी





मूल्य:— राजभाषा के प्रति निष्ठा